जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२६ अंक -06 फरवरी २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

राम चमक रहे भानु समाना

हु शि उ चौ श्री जग नाना राम चमक रहे भानु समाना तरूण, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर १००८ युगपुरूष, युग निर्माता, तरूण तपस्वी आचार्य श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन!

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन की असीम कृपा से होली चातुर्मास का पावन प्रसंग 'मंगलवाड़ श्री संघ' को मिला है।

होली चातुर्मास स्थल

मंगलवाड़ चौराहा, जिला
चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

उमरावमल ओस्तवाल
मुंबई

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

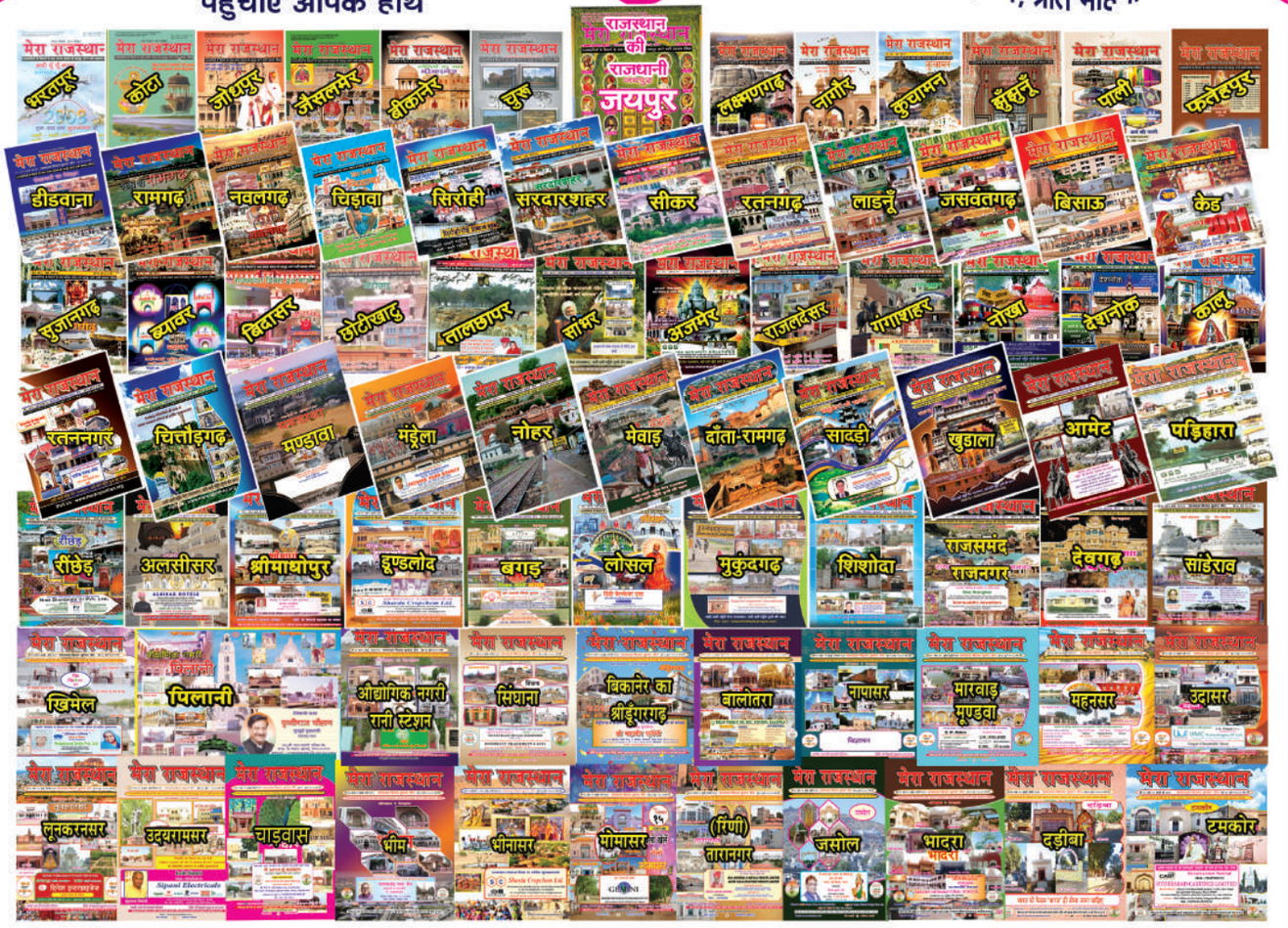

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- जालोर 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२६ अंक -06 फरवरी २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

॥ कल्पतरू जिशरणं पार्श्वनाथाय नमः॥

सत्यप्रेरणा आशीष
भारत गौरव आचार्यश्री पुलक सागरजी गुरूदेव

जिनशरणं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

गौरवाध्यक्ष

श्रीयुत प्रदीप जी 'मामा' -प्रतिभा जी जैन 'मामी'
भोपाल

जिनशरणं का विहंगम दृश्य

श्रीयुत राहुल जी-जिम्मी जी जैन
पुत्र संघपति श्री प्रदीप जैन 'मामा'भोपाल

स्थान: जिनशरणं तीर्थधाम मुंबई-सूरत हाईवे नं 8, मुकाम पोस्ट- उपलाट,
तहसील- तलासरी, जिला- पालघर, महाराष्ट्र, भारत- 401606

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

जय भारत! समाज व धर्म हित में प्रस्तुत जय भारत!

परस्परोपग्रहो जीवानाम

एक बार जरूर पढें

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

जिनागम

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हमें पता है आपके पास समय नहीं होगा

Social Media भी आपका समय मांगता है

पर

आपका अपना समाज भी चाहता है कि

अपना किमती समय समाज को भी दें

इसलिए राष्ट्रसेवी-समाजसेवी वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

बिजय कुमार जैन का निवेदन है कि कुछ समय

राष्ट्र, समाज को भी जरूर दें

ताकि जैन समाज का विकास होगा और धर्म का प्रचार-प्रसार

अपना कर्तव्य निभाएं, वायदा निभाएं, धर्म प्रेमी बनें

संपर्क करें

बिजय कुमार जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

मो. 9322307908

जय भारत! समाज व धर्म हित में प्रस्तुत जय भारत!

२७ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२६, अंक ६, फरवरी २०२४

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

जैन एकता का परिचायक है जिनशरणं

'जैन एकता' के परम समर्थक आचार्य पुष्पदंत जी के शिष्य मुनि आचार्य पुलक सागर जी की विहंगम सोच के साथ 'जिनशरणं' संपूर्ण जैन पंथों की निधि से बना है, जिसे देखने व दर्शनार्थ देश ही नहीं विदेशों से भी दर्शनार्थी पहुंच रहे हैं। विदित हो की 'जिनशरणं' की प्राण प्रतिष्ठा १७ फरवरी २०२४ से होने जा रही है।

'जिनशरणं' भारत के दो राज्यों यानी महाराष्ट्र व गुजरात के मध्य में है,जहां जैनों की संख्या अधिकतम है। 'जिनशरणं' के दर्शनार्थ जैन ही नहीं जैनेत्तर भी भारी संख्या में पहुंच रहे हैं और अपने आप को धन्य कर रहे हैं। 'जिनशरणं' की भव्यता को निखारने के लिए 'जिनशरणं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति' के पदाधिकारियों में विशेषकर पुणे रहवासी शोभाताई रसिकलाल जी धारीवाल, गौरवाध्यक्ष संघपति प्रदीप जैन 'मामा' भोपाल, मुख्य परामर्शक निर्मल गोधा मुंबई, हेमचंद झांझरी इंदौर, मुख्य संयोजक अशोक बोहरा बांसवाड़ा, संयोजक प्रदीप बड़जात्या इंदौर, कार्याध्यक्ष विनोद फांदोत उदयपुर, स्वागताध्यक्ष राहुल जैन भोपाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुशल ठोलिया जयपुर, उपाध्यक्ष सोहन कलावत उदयपुर, प्रचार मंत्री अंकित जैन 'प्रिंस' दिल्ली आदि आदि हैं। कहते हैं कोई भी सोच तब भव्य बनती है जब सोचने वाले आसमान की ओर दृष्टि रखते हैं, ऐसी ही सोच 'जिनशरणं' के पदाधिकारीयों की है, तभी तो भव्यता को निखार मिला है।

'जैन एकता' के परम समर्थक युग पुरुष, युग निर्माता, तरुण तपस्वी आचार्य रामलाल जी महाराज साहब का दीक्षा दिवस इस वर्ष हम सभी २१ फरवरी २०२४ को मनाएंगे। देश विदेश में फैले साधुमार्गी संप्रदाय के श्रावक-श्राविकाएं गुरुदेव रामलाल जी के दर्शन करने पहुंच रहे हैं, जो नहीं पहुंच पा रहे हैं वह अपने नजदीक स्थानक या अपने निवास में आचार्य श्री रामलाल जी के दर्शन मन ही मन कर आस्था स्वरूप नमन होकर आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। यहां यह बता देना भी उचित होगा कि परम तपस्वी ने अपने उवाच में कहा भी है कि 'जैन एकता' लिए जिस दिन 'संवतसरी' मनाना चाहेंगे, साधुमार्गी संप्रदाय भी उसी दिन 'संवतसरी' मनाएगा, यह सोच जैन समाज को और भी संगठित कर रहा है।

शेष पृष्ठ ७ पर...

२१ फरवरी देसनोक माघ शुक्ला १२

हु शि उ चौ श्री ज ग ना रा

राम चमक रहे भानु समाना

आचार्य भगवन युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन

मोहनचंद सरला बाफना
Mob: 9425505015

ओसवाल ट्रेड़िंग कम्पनी

5, टैक्सटाइल मार्केट, पंडरी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत-492004
मो.:-9424205015

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ६ से... सबसे खुशी की बात यह भी है कि आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आगामी 'होली चातुर्मास मंगलवाड़ चौराहा, जिला चित्तौड़गढ में मुंबई प्रवासी उमरावमल ओस्तवाल को मिला है जिससे मुंबई वासियों में हर्ष-हर्ष का माहौल व्यापत हुआ हैं।

सभी दिगम्बर-श्वेताम्बर संप्रदाय के आचार्य-मुनि-आर्यिका-साध्वी के चरणों में नमन होते हुए एक ही प्रार्थना करता हूँ कि 'जैन एकता' के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान करें, ताकि हम विश्व को बता सकें कि 'हम सब जैन हैं', २४ तीर्थंकर के अनुयाई हैं, 'णमोकार मंत्र' हमारा एक है, 'अहिंसा परमो धर्म' हमारा संदेश है, 'जियो और जीने दो' हमारा नारा है। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं,अभियान गतिमान में है, एक दिन इस अभियान को जरुर सफलता मिलेगी और विश्व को भारत माँ कह सकेगी कि 'मैं भारत हूं' इंडिया नहीं। जय जिनेंद्र!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

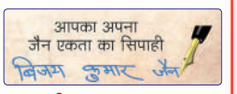

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२२३०७९०८

अगला अंक

जैन एकता

परस्परोपग्रहो जीवानाम

परस्परोपग्रहो जीवानाम

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

२१ फरवरी देसनोक माघ शुक्ला १२
युग पुरूष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर
आचार्य नानेश जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

राम चमक रहे भानु समाना

Ashok Surana
Mob: 9327331809
Mfg. Exclusive Gold Ornaments & Diamond Jewllary
983, Navpad Apartments, Near Raymond Show Room, Kailash Nagar, Surat, Gujarat, Bharat - 395002

परस्परोपग्रहो जीवानाम

'अहिंसा' और 'जैन एकता'
हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

D.U. Jain - Santosh Jain
Nishant Jain - Sohani N. Jain
Jaiman Jain - Reenie Jain

Res: 3G-121, kalpataru Aura, LBS Rd, Ghatkopar West, Mumbai-400 086, Maharashtra, Bharat
Mob: 8080051651 | Mail: du.jain@rediffmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं जिनशरणं हूँ....

मैं अकिंचन्य ही हूँ

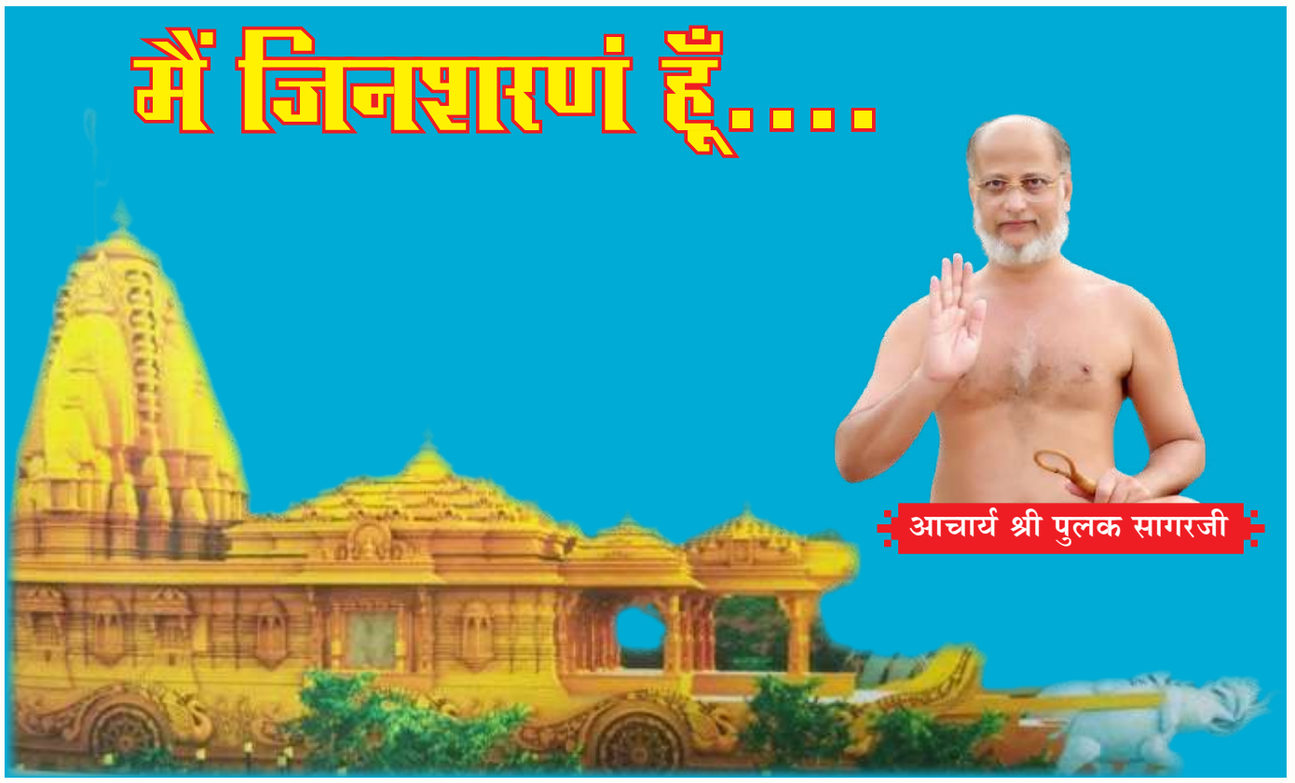

मेरा अंत:स्थल हमेशा ही निर्माण और विस्तार के विपक्ष में रहा है, मैं खुद समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसे हालात कहूँ, मन की विवशता कहूँ या अतिधर्मानुराग कहूँ या फिर नियति का फैसला ही मान लूँ। बहुत टाला, बहुत बचने का प्रयास किया, फिर भी नियति ने मुझे अपने पक्ष में कर ही लिया, अब मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ नियति ही मुझसे सब कुछ करा रही है।

आशीर्वाद मेरे पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री पुष्पदंत सागरजी महाराज का है। भूमि, पानी, पत्थर, वृक्ष ये सब तो प्रकृति प्रदत्त है। ईंट, मिट्टी, सीमेंट सब मानवीय अविष्कार हैं। धन धनपतियों का है, दानियों का है, आकार इंजीनियरों का मस्तिष्क है। श्रम श्रमिकों का है और समर्पण जिनभक्तों का है, ये सब बिखरे हुए थे, प्रकृति ने मुझे इनका संकलन व संयोजन करने के लिए निमित्त बनाया, मेरे आराध्य श्री पार्श्वनाथ भगवान ने मुझ नाचीज़ को इतने बड़े सौभाग्य में आगे किया और सृजन हो गया, मुझ अकिंचन्य से जिनशरणं तीर्थ का...

स्वर्णिम गजरथ जिनालय

मैं मंदिर हूं, देवालय हूँ, जिनालय हूँ, देरासर हूँ, कोईल हूँ, क्षेत्रम् हूँ, जिसने मुझे जिस नाम से पुकारा, मैं वही हूँ, पर इससे भी बड़ी बात मेरे लिये यह है कि मैं आचार्य श्री पुलकसागरजी गुरुदेव के स्वर्णिम स्वप्नों का स्वर्णिम गजरथ जिनालय हूँ, जमीन से उठाकर गुरुदेव ने मुझे १०८ फीट उत्तुंग मुक्त आकाश प्रदान किया।

मेरी लहराती ध्वजाएं, मुझ पर चढ़े हुए स्वर्ण कलश, मेरे आनंद की हिलोरे मुझे मंदिर में विराजमान मूलनायक तीर्थाधिपति 'जिनशरणं' कल्पतरु पार्श्वनाथ जैसे परमानंद के स्रोत से जोड़ती है, जब हवायें मुझे छूती है, वे ही धन्य नहीं होती, मुझे छूकर जिस-जिस को छूती हैं, उन्हें भी धन्यता प्रदान करती हैं। स्वर्ग से उतरे हुए दो ऐरावत हाथी उस समय मेरे गौरव को बढ़ा देते हैं, जब स्वयं सौधर्म इंद्र सारथी बनकर मेरे प्रभू का रथ चलाते हुए सुशोभित होते हैं। रोज सुबह सूर्य मेरी आरती उतारता है, चांद तारे मेरी परिक्रमा लगाते, कल्पवृक्ष की शीतल छाया मेरा आवास, भक्तों की भरी हुई झोलियाँ मेरा वरदान, क्योंकि मेरे मालिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ हैं।

सम्बोधि सभागार

'जिनशरणं' में एक खूबसूरत 'प्रवचन हॉल' का निर्माण भी किया गया है जहां एक वक्त में ५०० लोग बैठकर साधु संत के प्रवचन का लाभ लेकर

खुद के जीवन को साकार कर सकते हैं!

ध्यान मंदिर

मैं 'ध्यान मंदिर' हूँ, मैं आचार्यश्री पुलक सागर गुरुदेव के ध्यान में मेरा जन्म हुआ, भागती हुई दुनिया का ठहराव हूँ मैं, करोड़ों की भीड़ का एकांत हूँ मैं, भटके हुए लोगों की दिशा हूँ मैं! गुरुदेव के कई **शेष पृष्ठ ९ पर...**

पृष्ठ ८ से... वर्षों की तपस्या का फल हूँ मैं, और जो 'ध्यान' में लीन हो जाए उसके लिए आने वाला कल हूँ मैं!

यहाँ प्रार्थना नहीं, 'ध्यान' होता है! प्रार्थना वो होती है जब आप भगवान से कुछ कहते हैं, लेकिन 'ध्यान' तब होता है, जब भगवान आपसे कुछ कहते हैं। दुनिया तो शब्द सुनती है, 'ध्यान मंदिर' खामोशी भी सुन लेता है!

जिनशरणं छात्रावास

मैं 'जिनशरणम का छात्रावास हूँ, यूं तो एक विद्यालय हूँ, 'लाइफ लॉग एक्सपीरियंस' हूँ, संस्कार की ओर बढ़ा अपना 'सबसे पहला कदम' हूँ। बच्चों में जैन संस्कारों का पौधारोपण करना, शास्त्र के ज्ञान से जैन आचरण की जड़ें मजबूत करना और उसमें शिक्षा के साथ-साथ धर्म के फल भी ऊगाना मेरे जीवन का लक्ष्य है।

तीर्थंकरों की आराधना से प्रभात सुप्रभात होती है, दिन को सही दिशा मिलती है, जलाभिषेक करके बच्चे अपनी सोच को गंधोदक की तरह पवित्र करते हैं। संध्या वंदन के समय जिनराज की आरती और स्वाध्याय से शाम सजती है, जैन समाज का भविष्य भी यहाँ ही गढ़ा जाता है।

नवग्रहशान्ति जिनालय

जिनशरणं का नवग्रहशांति जिनालय, ग्रह प्रकृति को प्रभावित करते हैं। मानव जीवन में भी उथल-पुथल ग्रहों से आती है, जब कोई मानव उन ग्रहों के स्वरुप को जानकर उन ग्रहों के प्रभाव को समझकर, उन ग्रहों के अधिष्ठाता देवाधिदेव तीर्थंकरों की शरण में चला जाता है, तब दुष्ट से दुष्ट ग्रह भी उसके जीवन में वरदान बन जाते हैं। तीर्थंकरों की पूजा, विधान, भक्ति, मंत्र, जाप, हवन, यज्ञ, मानव के अंतःस्थल को पवित्र बनाते हैं, हमारे समस्त पापों को पुण्य में बदल देते हैं।

मुक्ताकाश त्रिमूर्ति

जिनशरणं के मुक्ताकाश में त्रिमूर्ति भगवान विराजित हैं, तीर्थंकर आदिनाथ, शांतिनाथ और महावीर स्वामी की परिकर २१ फीट अवगाहना से सुशोभित है, दक्षिण भारत उत्तर भारत शिल्प कला के अदभुत समागम दिव्य दर्शन यहाँ होते हैं, जहां समय-समय पर वार्षिक उत्सव, पंच वर्षीय उत्सव एवं बारह वर्षीय महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक के कार्यक्रम समर्पित होते हैं।

जिनशरणं में हर रोज जैन धर्म को एक उत्सव की तरह मनाया जाता है।

सामायिक गुफा

जिनशरणं के कोने में सबसे छुपी हुई एकांत में सामायिक गुफा के रुप में मेरा एक अस्तित्व है, मुझे एकांत पसंद है। मेरे आसपास का जो वातावरण है, वह तपस्वियों के तपोवन जैसा है, दुनियाँ की भीड़ में रहकर भी अकेले

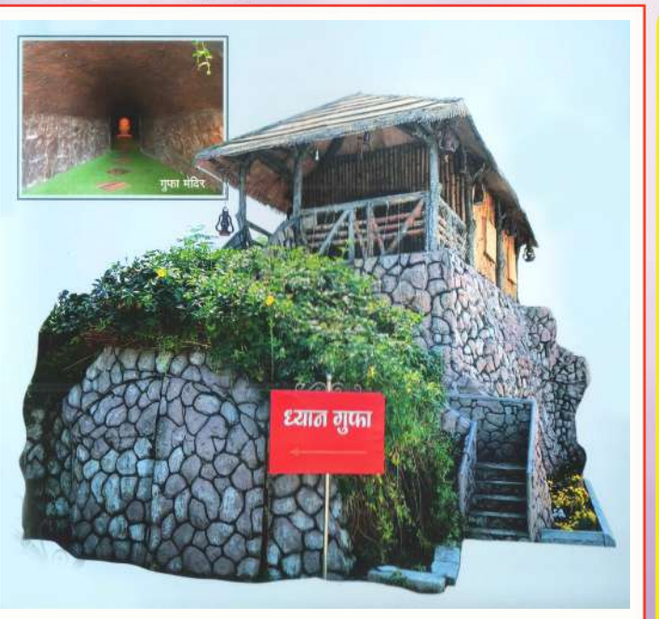

रहने का अनुभव मेरे पास है, जब कोई आत्मपिपासु नयन मूंदकर मेरे आगोश में आता है तो वह आत्मस्थ होने लगता है, और मेरे आनंद में डूब कर परमानंद को पा लेता है।

अतिथि निवास

'जिनशरणं तीर्थ' तीर्थंकर, साधु संत और भक्तों की एक ऐसी त्रिवेणी है जहां भगवान की अतिथि निवास कृपा भी बहती है, साधु संत का आशीर्वाद भी बहता है और भक्तों की असीम भक्ति भी बहती है, यहां बच्चे धर्म समझते हैं, बड़े धर्म में लीन हो जाते हैं, बुजुर्ग 'जिन' की शरणं में खुद को समर्पित कर देते हैं, इसलिए मोक्षयात्री से लेकर तीर्थयात्री तक, हर किसी की सुविधा का यहां विशेष ध्यान रखा गया है।

जिनशरणं में एक अतिथि निवास है, एक ऐसा अतिथि निवास जिसकी व्यवस्था का लाभ लेकर एक अतिथि खुद अतिथि नहीं रह जाता, बल्कि हमेशा के लिए उसका मन यहीं का हो जाता है!

प्रभु प्रसाद

जिन की शरण में आने वाले अतिथियों के लिए उच्च **शेष पृष्ठ १० पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

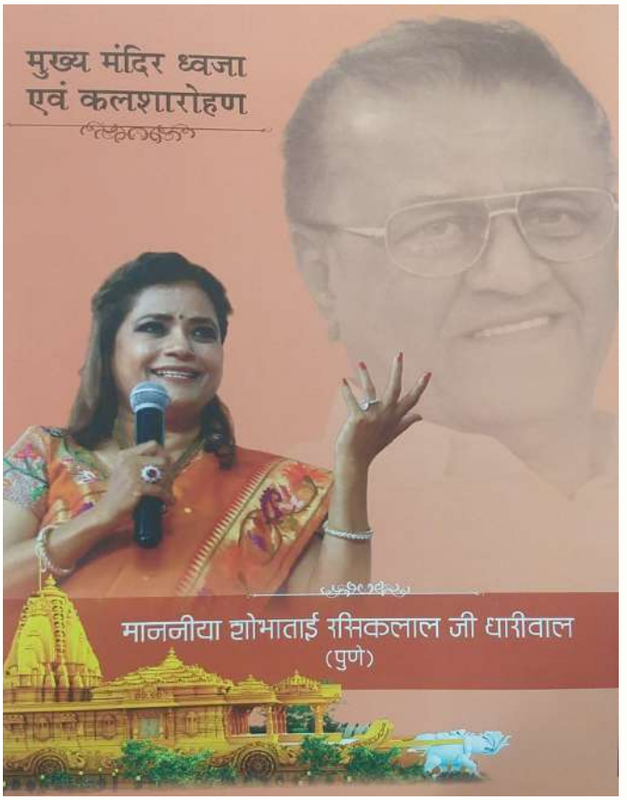

पृष्ठ ९ से... व्यवस्था की गई है यहां स्वरुचि भोजनालय है जहां प्रसाद रूपी उत्तम भोजन जैन नियमों के अनुसार मिलता है और ३०० से ४०० लोग एक साथ बैठकर प्रभु प्रसाद ग्रहण करते हैं।

आर्यिका माँ देवमति उपाश्रय

संत कभी निवास नहीं करते वे तो प्रवास करते हैं। हकीकत में उनका निवास

तो सिद्धालय है। जब तक सिद्धालय ना मिले, तब तक वे लंबी दूरी की थकान मिटाने को अल्प प्रवास कर, अपने मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करते हैं, जिसके लिए वों घरों में नहीं, उपाश्रयों में रहते हैं। यह साधु संतों की उपाश्रय स्थली, साधना स्थली और समाधि स्थली है, जो दादी मां आर्यिका देवमाति माता जी के नाम को समर्पित है

२१ फरवरी देसनोक माघ शुक्ला १२

आचार्य भगवन युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के
दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर
कोटि-कोटि नमन

राम चमक रहे भानु समाना

Ratanlal Parakh Mob: 999384 2003

Manoj Enterprises Dalli Rajhara

Prop: Shantilal Ashish Kumar Parakh

Ganesh Udyog, Durg

Prop: Dyanchand, Rajesh Kumar & Nirmal Kumar

Shanti Trading Co. Dalli Rajhara

Prop: Gyanchand Vinay Kumar Parakh

Guru Nanak Market, Dalli Rajhara, Balod, Chhattisgarh, Bharat - 491228

'जैन एकता' से ही होगा, जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

CK CITY KING

Anil Kumar Jain
Mob: 9811137498

President: Shri Digamber Jain Samaj, Bahubali Enclave, Delhi, Bharat - 92
Secretary: Ashok Bazar, Gandhi Nagar, Delhi, Bharat - 110031
President: Bahubali Welfare Association, Delhi, Bharat - 110092
Member: Digamber Jain Samaj, Shanker Nagar, Delhi, Bharat -51

Paras Hosiery

Manufacturers of: Hosiery T-Shifts

IX/3516, Mahavir Gali, Sunder Chowk, Gandhi Nagar,
Delhi, Bharat - 110031
Ph.: 011-22071311, 41797155 | Email: cityking.gaurav@gmail.com

इंतजार की घड़ी
हुई खत्म
जिनशरणं
पंचकल्याणक
महोत्सव
17 से 22
फरवरी 2024
स्थान : जिनशरणं तीर्थधाम
मुम्बई-सूरत हाईवे नं. 8, मुकाम पोस्ट उपलाट
तहसील तलासरी, जिला पालघर (महा.) 401606
गुरु शिष्य के पावन सानिध्य
में होगा पावन आयोजन
आज्ञा सम्राट प.पू. गणाधिपति आचार्यश्री
पुष्पदंत सागरजी गुरुदेव
भारत गौरव आचार्यश्री
पुलक सागरजी गुरुदेव ससंघ
जिनशरणं तीर्थधाम
SUBSCRIBE ON
Jinsharnam Media
9810900699

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैनत्व की राह पर सशक्त साधुमार्गी सम्प्रदाय

राम चमक रहे भानु समाना

साधुमार्ग की पावन परम्परा के महान् आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. का जन्म पौष शुक्ला ९ वि.सं. १८६० को टोडारायसिंह नगर में श्री रतनचन्दजी श्रीमती मोतीदेवी चपलोत के यहाँ हुआ। अल्पवय में ही पूज्यश्री अद्भुत प्रतिभा के धनी रहे, आपको संसार में अभिरुचि नहीं थी। संसार को असार जानकर संयम ग्रहण करने का दृढ़ संकल्प जागृत हो उठा। मिंगसर सुदी २ वि.सं. १८७९ को 'बूंदी' में आपने पूज्य श्री लालचंदजी म.सा. से दीक्षा ग्रहण की। मुनि अवस्था में आपने आगमों का जलस्पर्शी अध्ययन किया। आपने साधुओं में शिथिलता को देख अपने गुरु से संयम की शुद्ध पालना की भावना दर्शाई, तदनन्तर गुरु आज्ञा पाकर और पृथक विचरण करते हुए २१ साल तक बेले-तेले की उग्र तपस्या की। १२ महीने केवल एक ही चादर धारण करना, जीवनपर्यन्त मिठाई व तली वस्तु का त्याग तथा १२ द्रव्यों से अधिक नहीं खाने का प्रण, प्रतिदिन २००० नमोत्थुणं द्वारा देवस्तुति ऐसी कठोरतम प्रतिज्ञाएँ धारण की, जहाँ-जहाँ भी आप पधारे आपके शुद्ध संयम एवं अनुशासन को देखकर जनता नतमस्तक होने लगी। माघ सुदी ५ वि.सं. १९०७ को बीकानेर में चतुर्विध संघ से आपने आचार्य पद स्वीकार किया। पूज्यश्री की कतई भावना नहीं थी कि वे आचार्य बनें, आपके तेज से प्रभावित होकर नाथद्वारा प्रवचन सभा में सोने के सिक्कों की बारिश हुई,ये सिक्के आज भी नाथद्वारा के लोगों के पास देखे जा सकते हैं। रामपुरा में मुमुक्षु राजीबाई की बेड़ियाँ पूज्यश्री के सहज दृष्टि पड़ते ही बन्धन से मुक्त हो गई। ऐसी कई घटनाएँ आपके शुद्ध संयमी परिवेश के कारण घटित हुई। पूज्यश्री अपने अन्तकरण में रमण करते हुए वैशाख शुक्ला ५ संवत् १९१७ को 'जावद' में संलेखना संथारा के साथ महाप्रयाण को प्राप्त हुए।

आचार्य शिवलालजी म.सा.

आपका जन्म मालव भूमि में 'नीमच' के पास धामनिया नामक एक छोटे-से ग्रामीण अंचल में संवत् १८६७ पौष सुदी १० को मातुश्री कुन्दनदेवी की रत्नधारिणी कुक्षी से हुआ। आपके पिताश्री श्री टीकमचंदजी बोड़ावत से बचपन में ही आपको सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। श्रमणत्व की साधना के लिए आपने वि. सं. १८९१ को 'बूंदी' में पूज्य श्री दयालचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की। पूर्ण सजगता एवं विनीत भाव से अध्ययन के कारण अल्प समय में ही आपकी प्रतिभा निखर उठी। संवत् १९०७ की माघ सुदी ५ को बीकानेर पाँच दीक्षाओं के ऐतिहासिक अवसर पर संघ के उत्तरदायित्व के रुप में आपको युवाचार्य पद प्रदान किया गया। पूज्यश्री ने अपने दीर्घ अनुभवों के साथ ७२ कमलों **शेष पृष्ठ १४ पर...**

100% Veg.

NAKODA

NOURISH

nakodagheetel

FRESHLY PRESSED

COLD PRESSED OILS

- Minimal Heating
- No Chemicals
- Manual Filtration
- 100% Natural

From the house of

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com info@gheetel.com

FORTIFIED

fssai Lic. No: 10017022005931

DAR KOSHER

APEDA

An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १२ से ... की समाचारी का निर्धारण किया, जिसका आज भी पालन किया जा रहा है। आपने ३३ वर्ष तक एकान्तर तप की साधना की और अन्त में संलेखना संथारा सहित संवत् १९३३ की पौष शुक्ला ६ को जावद में मोक्षगामी हुए।

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.

मारवाड़ की मरुधरा जोधपुर में श्रेष्ठीवर्य नथमलजी खिंवेसरा की धर्मपत्नी जीवीबाई की कुक्षि से संवत् १८७६ को शुभ नक्षत्र में आपका जन्म हुआ। आपका विवाह तय करने के साथ ही जैसे ही आपकी बारात वधु पक्ष के तौरण पर पहुँची, आपकी पाग नीचे गिर गई, बस पाग गिरते ही आपको वैराग्य उत्पन्न हो गया और आप पुन: घर की ओर लौट गये। चैत्र सुदी ११ वि.सं. १८९८ को आपने श्री हरषचंदजी म.सा. के पास बूंदी में भागवती दीक्षा ग्रहण की। आपकी विनयशीलता एवं ज्ञानपीपासा अत्यन्त तीव्र थी। रामपुरा में एक सुश्रावक पंडितरत्न श्री केदारजी गंगा ने आपके धैर्य की परीक्षा ली, जिसमें आप शत-प्रतिशत सफल रहे। आपकी अद्भुत प्रतिभा को देखकर आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. ने पौष शुक्ला सप्तमी वि.सं. १९२५ को युवाचार्य पद प्रदान किया। आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. के महाप्रयाण के पश्चात वि.सं. १९३३ की पौष शुक्ला ६ को साधु संघ का उत्तरदायित्व आपश्री के सक्षम कंधों पर आ गया, आप छोटे-बड़े अनुशासन प्रिय साधकों के प्रति अटूट स्नेह भाव बरसाते और जो भी अनुशासन भंग करते उनको कठोर दंड देने में पीछे नहीं रहते थे। वि.सं. १९२८ को पाली में एक जैनाचार्य श्री किशनसागरजी म.सा. ने आपको शास्त्रार्थ हेतु चुनौती दी, जिसमें आप विजयी हुए, आपने तत्कालीन पंजाब, कराची, रावलपिंडी तक की सुदूर यात्राएँ की, आपको वचन सम्पदा की सिद्धि प्राप्त थी, आपने अपने शासनकाल में जिनशासन की अद्भूत प्रभावना की एवं वि.सं. १९५४ माघ सुदी १० को रतलाम में संथारा संलेखना सहित देवलोक हुए।

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

निर्ग्रन्थ शिरोमणि आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. का जन्म मरुधरा के पाली में सुप्रसिद्ध धोका परिवार में श्रेष्ठीवर्य श्री पाखरदाजी की धर्मपत्नी हीराबाई कुक्षी से वि.सं. १८८५ वैशाख शुक्ल ४ को हुआ। माता-पिता के आकस्मिक वियोग से आपकी अर्न्तआत्मा संसार से विरक्त हो उठी। वि.सं. १९०९ की चैत्र शुक्ला १२ को श्री हरकचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से ब्यावर में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। अल्पकाल में ही आपकी गिनती जैन जगत के मूर्धन्य विद्वानों में होने लगी। आपके ज्ञान दर्शन चारित्र की छाप सम्पूर्ण संघ पर पड़ी, इसी कारण तत्कालीन शासन व्यवस्था को देखते हुए आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. ने वि.सं. १९५४ आसोज शुक्ला पूर्णिमा को आपको युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। युवाचार्य काल में आपने सुदृढ़ संगठन हेतु नीति निर्धारण का कार्य किया। वि.सं. १९५४ की माघ शुक्ला १० को आप आचार्य पद पर आरुढ़ हुए। आपने १५० के आस-पास संतों के संगठन हेतु ९४ कलमों की समाचारी निर्धारित की। आपने शासनकाल में आपने जिनशासन को दैदीप्यमान करने हेतु कई उल्लेखनीय कार्य किये, सभी का वर्णन प्रस्तुत करना यहाँ सम्भव नहीं है, आपका महाप्रयाण वि.सं. १९५७ कार्तिक शुक्ला १० को रतलाम में संलेखना संथारा सहित हुआ।

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.

आपका जन्म ढुंढार प्रांत के 'टोंक' शहर में श्रेष्ठीवर्य श्री चुन्नीलालजी बम्ब की धर्मपरायण सद्गुणों से सुसज्जित धर्मपत्नी श्रीमती चाँदकंवर बाई की कुक्षी से विक्रम संवत् १९२६ की आषाढ़ शुक्ला १२ को हुआ। आपके गर्भ में आते ही परिवार में अन्न-धन्न व्यापार में विपुल वृद्धि हुई, इसीलिए आपका नाम श्रीलाल रखा गया, आपने ६ वर्ष की अल्पआयु में प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि कंठस्थ कर लिये, मुनिगणों का सान्निध्य पाकर संसार की असारता का बोध हुआ, जिससे संसार के कार्य से उदासीन रहने लगे, आपकी यह स्थिति देखते हुए पारिवारिकजनों ने आपकी शादी मानकंवरबाई से करवा दी, शादी के बाद भी आपका मन सांसरिक कार्यों में नहीं लगा एवं आपने ब्रह्मचर्य की दुसाध्य कठोरतम गति ग्रहण कर ली एवं रतलाम में आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. की सेवा पहुँचे। घरवालों द्वारा आपश्री पर अनेक कठोर प्रतिबन्ध लगाने के बावजूद भी आपके वैराग्य भाव में कोई अंतर नहीं आया, बल्कि विशेष दृढ़ता आ गई। परिवार वालों का प्रयत्न रहा कि आप संसार के बन्धन में बंधें, लेकिन आपश्री का आन्तरिक वैराग्य होने से सभी का प्रयास निष्फल रहा, तदन्तर आप हवेली के ऊपरी भाग से कूद गये। धन्य पूज्यश्री जी को, जिन्होंने स्वयं प्रतिज्ञा लेकर अपने प्राणों की परवाह नहीं की। आपकी वैराग्य भावना को देखकर पारिवारिकजनों ने आपकी विधिवत् दीक्षा विक्रम संवत् १९४५ माघ कृष्णा ७ को 'बणोठा' में श्री किशनलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न करवाई। विक्रम संवत् कार्तिक सुदी १० को रतलाम में आप आचार्य पद पर आरुढ़ हुए, उस समय आपकी उम्र ३१ साल थी। अत्याधिक सान्निध्य में बड़े-बड़े रियासतों के राजा-महाराजा, हाकिम-दीवान, ठाकुर आदि आते एवं आपके उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित होते, आपसे जीवदया तप- **शेष पृष्ठ १६ पर ...**

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Vijaychand Vaid (Phalodi)
Mob. : 9345196701
Priya Exports
40/25, Kannu Swamy Road, R.S. Puram,
Coimbatore, Tamil Nadu, Bharat- 641002
भारत को 'BHARAT' ही बोलें 'INDIA' नहीं
अभियान की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

Vibhooshit Decor

Events | Exhibitions | Conferences

We Make It Happen

ONE STOP DESTINATION FOR RELIGIOUS EVENTS

EVENTS SERVICES

Planning | Conceptualizing | Designing | Decoration

RELIGIOUS EVENTS

Chaturmas Mahotsav| Jinalay Pran Pratishtha Mahotsav
Diksha Mahotsav | Samuhik Aayaambil Oli | Samuhik Updhan Taap
Samuhik Updhan Maal | Samuhik Varshitap Parna | Jinalay Salgira Utsav

RECENT EVENTS

મુમુક્ષુ. તત્વ ભાઈ દીક્ષા મહોત્સવ. નિશ્રા - પૂ.આ. શ્રી ઉદયવલ્લભસૂરી મ. સા.

પદ્મભૂષણ જૈનાચાર્ય વિજય રત્નસુંદરસૂરીજી મહારાજ સાહેબ ચાતુરમાસ.

મુમુક્ષુ. સેતુકભાઈ દીક્ષા મહોત્સવ. નિશ્રા - પૂ.આ. વિજય શ્રેયાંશપ્રભસૂરિ મ. સા.,પાલીતાણા.

શ્રી જયઘોષ સૂરીશ્વરજી મહારાજા સમાધિ મંદિર પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ,
રિવરફ્રન્ટ તથા બોપલ આંબલી, અમદાવાદ.

સામુહિક ઉપધાન તપ આરાધના નિશ્રા - પૂ.આ. શ્રી ઉદયવલ્લભ મ. સા., અમદાવાદ.

Hardik Shah
+91 96870 84745

Mohil Chotaliya
+91 84690 69996

info@vibhooshitdecor.com
@Vibhooshit_decor

Vibhooshit Decor Bh. The August Apartment,
Opp. Science City, Off. S P Ring Road,
Bhadaj, Ahmedabad - 380060

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... साधना आदि का उपदेश सुन हर्षित होते। फलस्वरुप कई स्थानों पर पशु बली बंद हुई एवं जीवरक्षा के कार्य भी हुए। आपके जीवन से देशी ही नहीं विदेशी भी प्रभावित होते रहे। हिन्दु-मुस्लिम सिख-ईसाई सभी सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने आपकी अमृतमयी वाणी से प्रेरणा ग्रहण की। आपने अपने उपदेश से २५०० बकरों, २० पाड़ों और एक सिंह को एक साथ अभयदान दिलाया, आपके प्रवचनों में शिक्षा का महत्व भी हमेशा प्रतिपादित होता रहा, जिससे अनेक स्थानों पर शिक्षा के केन्द्र स्थापित हुए। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ सुदी ३ को जैतारण में आपको मोक्ष प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

थांदला 'मालवा' में आपका जन्म श्रीमती नाथीबाई एवं पिताश्री जीवराजजी कवाड़े के यहाँ विक्रम संवत् १९३२ की कार्तिक सुदी ४ को हुआ। नवजात बालक का भव्य ललाट, सुनहरा रंग, सुन्दर देह दृष्टि को देखकर आपका नाम 'जवाहर' रखा गया। अल्पवय में ही आपके माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से आपका मन संसार से विरक्त हो गया, फलस्वरूप विक्रम संवत् १९४८ की मिंगसर सुदी २ को 'लिंबड़ी' में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई, आपके दीक्षा प्रदाता श्री घासीलालजी म.सा. थे। आपके गुरु भ्राता श्री मगनलालजी म.सा. थे। आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन करने के साथ ही थोकड़े आदि का अच्छा अभ्यास किया, आपने उस समय व्याप्त दया दान विरोधी धारणों का पूर्ण रूप से खण्डन किया। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ शुक्ला ३ को 'भीनासर' में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया, आपके शासन में जिनशासन की अद्भुत तथा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये खूब प्रयास किये। जनमानस को गुमराह कर रही अल्पारंभ महारंभ, मिल के वस्त्र, चर्बी, दयादान आदि की सटीक व्याख्या देकर जनमानस की भ्रान्ति को दूर किया। आपने धर्म की रक्षा के साथ राष्ट्र की रक्षा का संदेश दिया, जिससे प्रभावित होकर बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेता मदनमोहन मालवीय, बालगंगाधर तिलक, बिट्ठल भाई पटेल, सरदार वल्लभभाई पटेल ने आपके सानिध्य का लाभ उठाया। आप सुसंगठन के पूर्ण हिमायती रहे। आपके प्रवचनों की श्रृंखला 'जवाहर किरणावली' विद्वत जगत् में सर्वोपरी स्थान रखती है तथा आदर की दृष्टि से पढी जाती है। विक्रम संवत् २००० आषाढ शुक्ला ८ को संलखेना संथारा कर 'भीनासर' में आपका महाप्रयाण हुआ।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.

वीर वसुंधरा मेद पाठ की राजधानी उदयपुर के ही विशिष्ट राज्य कर्मचारी श्रीमान साहबलालजी मारू की धर्मपत्नी इंद्राबाई की कुक्षि से विक्रम संवत् १९४७ की श्रावण सुदी तृतीया को एक बालक ने जन्म लिया, जिसके माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्यों ने शरीर सम्पदा को देखकर 'गणेश' नाम रखा। १२-१३ वर्ष की अल्पायु में हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। माता-पिता, बहन एवं पत्नी के प्लेग की चपेट में आ जाने से उनका स्वर्गवास हुआ, जिससे आपका मन संसार के माया-जाल से विचलित हो उठा। आपने मिंगसर कृष्णा १ विक्रम संवत् १९६२ को उदयपुर में भागवती दीक्षा पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के श्रीमुख से ग्रहण कर अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। आपने गुरू द्वारा ली गई परीक्षा में व्याकरण में १०० में से ८२ अंक साहित्य में ९४ अंक एवं मौखिक में १०० में से १०० अंक प्राप्त कर अपनी निर्मल प्रज्ञा का उदाहरण प्रस्तुत किया। आपके नाम का संधिविच्छेद करने पर 'गण-ईश' यानी 'गणेश' रूप में सार्थक हुआ। आप अनेक गुणों के स्वामी बने, आपने भी जीवदया का बेजोड़ प्रचार-प्रसार किया, आपको युवाचार्य पद फाल्गुन सुदी ३ विक्रम संवत् १९९० को 'जावद' में प्राप्त हुआ। विक्रम संवत् २००८ आषाढ़ शुक्ला ८ को 'भीनासर' में आप आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए, आपमें गजब की सहनशीलता थी, सम्पूर्ण श्रमण संघ के वृहद साधु सम्मेलन में आपको विक्रम संवत् २००९ में वैशाख सुदी १३ को ४० हजार लोगों के मध्य ३४१ संत और ७६८ साध्वी रत्नों की उपस्थिति में उपाचार्य पद की चादर मारवाड़ 'सादड़ी' में ओढ़ाई गई, इतने विशाल संघ के एकमात्र स्वामी होते हुए भी आपने संघ में अनुशासनहीनता को प्रशय नहीं दिया। श्रमण संघ में शिथिलाचार को देखते हुए आपने ३० नवम्बर १९६० को श्रमण संघ से अपने आपको अलग कर दिया। आप संगठन के प्रबल हिमायती थे, लेकिन श्रमण संस्कृति को सर्वोपरी मानकर चलते थे। कथनी और करनी आपकी जीवन की विशेषता थी। आपका महाप्रयाण विक्रम संवत् २०१९ माघ कृष्णा दूज को संलेखना संथारा के साथ उदयपुर में हुआ।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

वीर वसुंधरा चित्तौड़ के 'दांता गांव' में वि.सं. १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को एक युगपुरुष का जन्म श्री मोड़ीलालजी पोखरना एवं श्रीमती श्रृंगारबाई के पुत्र के रूप में हुआ। हर्षोल्लास के वातावरण में परिवार वालों ने शुभ नाम गोवर्धन रखा। आपने बचपन से ही अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय देते हुए बालकों की टोली का नेतृत्व किया। आप अपनी माता के प्रति विनयवान तथा आदर भाव का एक आदर्श रूप रहे, अपनी बहन की तपस्या के उपलक्ष्य में जब आपने भादसोड़ा में मेवाड़ मुनि श्री चौथमलजी म.सा. के मुखारविन्द से छठे आरे का वर्णन सुना तो आपका मन संसार से विरक्त हो गया। आपने अल्पकाल में ही सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, २५ बोल, दशवैकालिक सूत्र आदि कंठस्थ कर लिया। वि.सं. १९९६ पौष शुक्ला अष्टमी को कपासन में आपकी भव्य दीक्षा आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न हुई। आपने दीक्षा अंगीकार कर अल्पकाल में सैकड़ों थोकड़े कंठस्थ करने के साथ ही प्रमाणनय तत्वालोक, षट्-दर्शन समुच्चय, स्याद्वाद मंजरी आदि अनेक ग्रंथों का तलस्पर्शी गहन अध्ययन करते हुए जैन आगमों के गहन गंभीर रहस्य का अपनी निर्मल प्रज्ञा से अध्ययन किया। वि.सं. २०१४ की आसोज शुक्ला द्वितीया को आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा ने आपकी तीक्ष्ण प्रज्ञा को देख आपको साधुमार्गी संघ के युवाचार्य पद के रूप में उदयपुर के राजमहल में प्रतिष्ठापित किया। आपश्री जी ने सूझ-बूझ से संघ के विकास हेतु कई आयाम प्रदान किये। आपने गुरु की आग्लान भाव से सेवा करते हुए एक आदर्श पेश किया। वि. सं. २०१९ माघ कृष्ण द्वितीय को आप अष्टम् पाट पर उदयपुर में आसीन हुए। आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचना सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोगमति सम्पदा, संग्रह परिज्ञा सम्पदा से ओत-प्रोत आचार्यदेव ने जिनशासन की भय जाहोजलाली की। आपने समता कवच धारण करके सत्य सिद्धान्त का शंखनाद कर शिथिलाचार के चक्रव्यूह का भेदन कर श्रमण संस्कृति के प्रति सजग रहे।

आपने आचार्य पद के पश्चात् जिनशासन की जो **शेष पृष्ठ १७ पर...**

पृष्ठ १६ से ... भव्य प्रभावना की, उसे देख लोगों को पंचम आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की भविष्यवाणी की याद दिलाई, कि मुझे क्या देखते हो आठवां पाट जिनशासन को और भी दैदीप्यमान करेगा, यथार्थ रूप में विकट मोड़ में आपश्री की समता बेजोड़ रही। आचार्यदेव ने अपने आचार्य काल में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि राज्यों में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा के दौरान मालवा में धर्मपाल समाज विकास हेतु क्रान्ति कर 'बलाई' समाज को प्रतिबोधन दिया। अपने शासनकाल में लगभग ३५० दीक्षाएं प्रदान कर शासन में महत्ती प्रभावना की। स्थानकवासी जैन समाज के पिछले ५०० वर्षों के इतिहास में 'रतलाम' में एक साथ २५ दीक्षा देकर एक नवीन इतिहास की सर्जना की। समता दर्शन एवं समीक्षण ध्यान को देकर प्राणीमात्र पर महान् उपकार किया, संघ आपका ऋणी है। वि.सं. २०५६ कार्तिक बदी ३ को उदयपुर में संलेखना संथारा से आपका महाप्रयाण हो गया।

नवम पाट पर विद्यमान वर्तमान आचार्य श्री रामेश

जैन शासन क्षितिज में साधुमार्गी संघ का विशिष्ट स्थान है। समय-समय पर अनेक महान् क्रान्तिकारी प्रभावशाली आचार्यों ने इस संघ को पल्लवित, पुष्पित एवं संवर्धित किया है, इसी कड़ी में शास्त्राज्ञ, तरुणतपस्वी, प्रशान्तमना, व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. वर्तमान में संघनायक के रूप में इस विशाल संघ को निरन्तर अभिवृद्धि की और भी कर भी रहे हैं। आपका जन्म 'देशनोक' के भूरा कुल में विक्रम संवत् २००९ चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को रत्नधारिणी माता गवरा की कुक्षि से हुआ। आपके पिता का नाम नेमीचंद था। बचपन से ही आपको अपने पारिवारिकजनों से सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। बाल्यावस्था से ही आप प्रखर मेधावी एवं बुद्धिशील व्यक्तित्व के धनी थे। 'जवाहर किरणावली' की कथा पढ़ने से आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ एवं आपने वि.सं. २०३१ माघ शुक्ला १२ को 'देशनोक' में समताविभूति आचार्य श्री नानेश के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा अंगीकार की। आपश्री में विनय, अनुशासन एवं समय की सजगता को ध्यान में रखते हुए आचार्य श्री नानेश ने वि.सं. २०४७ आसोज सुदी दूज को चित्तौड़गढ़ में मुनिप्रवर के पद से अलंकृत किया। आपश्री अप्रतिम प्रतिभा के धनी एवं आगमों के गूढ़ व्याख्याता हैं। आपकी इस विशेषता के कारण आप शास्त्रज्ञ एवं परमागम रहस्यज्ञाता की उपाधि से सुशोभित हुए। **आपकी सारणा, वारणा व धारणा के गुणों से प्रभावित होकर वि.सं. २०४८ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को बीकानेर के राजमहल में आपको युवाचार्य पद से अभिषिक्त किया गया।** आप व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक व आपकी सद्प्रेरणा से लाखों लोग कुव्यसनों का त्याग कर सद्मार्ग की ओर अग्रसर हुए हैं। आपश्रीजी ने भारत के राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल एवं आन्ध्रप्रदेश आदि प्रांतों में विचरण कर जिनशासन की भव्य प्रभावना की, अभी तक आपने १९८ दीक्षा प्रदान कर तिन्नाणं और तारियाणं के पद को सार्थक किया है। साधुमार्गी संघ के इतिहास में प्रथम बार आपने एक साथ छः मुमुक्षु भाईयों को दीक्षा प्रदान कर नवइतिहास का सृजन किया है।

आप मुनिरूप में मासखमण करने वाले साधुमार्गी संघ के प्रथम आचार्य हैं। विसं. २०५६ कार्तिक कृष्णा तृतीया को उदयपुर में आप हुक्मसंघ के नवम् पाट पर आचार्य के रूप में आरूढ़ हुए। आपश्री हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं के साथ-साथ जैन एवं जैनेत्तर दर्शनों के भी विशेष ज्ञाता हैं। संयम के प्रति हर पल सजगता व जागरूकता आपके जीवन के रोम-रोम में विशेष रूप से समाहित है। कथनी और करनी में एकरूपता व आडम्बर रहित जीवन आपके प्रमुख गुण हैं। आपके प्रवचन की पावन श्रृंखला 'रामेश उवाच' के रूप में साहित्यिक जगत् में विशेष स्थान रखती है। श्रावक-श्राविकाओं में धार्मिक क्रियाओं के प्रति सजगता को आप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हैं। श्रावक-श्राविकाओं की आपने नवतत्त्व, बारह व्रत व लघुदण्डक थोकड़े सीखने हेतु आह्वान किया, आपके आह्वान से प्रेरित होकर देश भर के हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने इस आह्वान को सार्थक किया।

चतुर्विध संघ में क्रिया तथा ज्ञानार्जन के प्रति आशातीत वृद्धि को पाकर हार्दिक प्रमोद होता है। 'बावरी' जाति के हजारों लोगों को प्रतिबोधित कर उन्हें सिरीवाल जैन के नाम से संबोधित कर आप 'सिरीवाल प्रतिबोधक' के रूप में विख्यात हुए। चतुर्विध संघ की बागडोर संभालने के पश्चात् व्यसनमुक्ति, संस्कार निर्माण वर्ष, समता स्वाध्याय वर्ष, संस्कार समीक्षा सुधार वर्ष, संघ समर्पणा वर्ष, उपासना विशुद्धि वर्ष, श्रमणोपासक वर्ष, ज्ञानचेतना वर्ष, आत्मनिर्भर वर्ष, ज्ञान आराधना वर्ष, प्रदान कर आपने संघ को नये आयाम प्रदान किये, ऐसे युगपुरुष को शत्-शत् वन्दन-अभिवन्दन, समस्त जैन समाज की घोषित एकमात्र विश्वस्तरीय पत्रिका 'जिनागम' परिवार करता है।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
परस्परोपग्रहो जीवानाम

दानमल जैन
भ्रमणध्वनि: ९४१४८४९८३७
जेतपुर
साड़ी हाऊस
विक्रम : ९४१४१२७०५१,
नरेन्द्र : ९४१३६६१३५१
दूरध्वनि : ९४१३४६७०५१
श्रद्धा साड़ीज
रमेश ९४१४१३५१४५, प्रकाश : ९४१४४४०८५४ दूरध्वनि : ९५३०१२००५१
पेटी का नोहरा, मोती चौक, जोधपुर, राजस्थान, भारत-३४२००१
जोधाणा साड़ीज
अयुष ७७९२०९०००
जे. के. नर्सिंग होम की गली, प्रथम सी रोड सरदारपुरा,
जोधपुर, राजस्थान, भारत-३४२००१

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मुनि रामेश जी को प्राप्त युवाचार्य पद

फाल्गुन शुक्ल ३, संवत २०४८, तद्नुसार ७ मार्च १९९२
स्थल बीकानेर का भव्य दूर्ग जूनागढ

प्रायः देखा गया है कि किसी भी धर्म के संस्थापक एवं धर्म प्रवर्तक महापुरूष के निर्वाण अथवा देहावसान के पश्चात् उनके संघ अथवा सम्प्रदाय में नेतृत्व के प्रश्न को लेकर बिखराव होना प्रारंभ हो जाता है, कभी-कभी यह बिखराव ऐसे महापुरुषों के जीवनकाल में भी हो जाता है, जैन संघ भी बिखराव की इस प्रक्रिया से विलग नहीं रह सका है। जैन आगमों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि नेतृत्व एवं वैचारिक मतभेद की प्रक्रिया तीर्थंकर महावीर के जीवनकाल में ही प्रारंभ हो चुकी थी, जब स्वयं महावीर के जामाता जमालि ने महावीर के संघ से पृथक होकर अपना नया सिद्धान्त 'बहुतरवाद' चलाया। स्मृतिशेष आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को भी अपने जीवनकाल में ही अपने ही कतिपय शिष्यों को उस समय संघ से निष्कासित/बहिर्भूत करना पड़ा, जब उन्होंने युवाचार्य के चयन का निर्णय लिया।

समता विभूति आचार्य-प्रवर श्री नानेश ने अपनी प्रखर प्रतिभा से अपने समस्त शिष्यों में से सर्वाधिक योग्य तरुण तपस्वी, सेवाभावी, आगम मर्मज्ञ, व्यसनमुक्ति के प्रेरक मुनि श्री रामलालजी म.सा. को थार की मरुभूमि, मानव सभ्यता की उषाकाल की साक्षी, सारस्वत सभ्यता का हृदयस्थल, शौर्य, त्याग, बलिदान, विद्या अध्ययन का केन्द्र बिन्दू, सीमा प्रहरी की ऐतिहासिक नगरी बीकानेर के भव्य दूर्ग जूनागढ के राजप्रासाद में फाल्गुन शुक्ला ३, सं. २०४८ तदनुसार ७ मार्च, १९९२ को गौरव गरिमामण्डित श्रीसंघ के एक और नायक का चयन कर इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ पर आचार्य सुधर्मा के ८२वें पट्टधर के रूप में युवाचार्य रूपी धवल चादर प्रदान की, जिसे मुनि श्री रामेश ने गुरू आज्ञा के रूप में स्वीकार किया।

सन् १९९२ से १९९५ तक आचार्यश्री के इस निर्णय को लेकर शिष्यों में कोई मतभेद दृष्टिगोचर नहीं हुआ, किन्तु सन् १९९६ में आचार्यश्री के ही कतिपय शिष्य नेतृत्व की महत्त्वाकांक्षा को लेकर संघ से निष्कासित/बर्हिगमित हो गए।

संघ में हुए इस घटनाक्रम से आंशिक ऊहापोह की स्थिति होना स्वाभाविक था, किन्तु जीवन के अंतिम पड़ाव में भी आचार्य श्री नानेश ने उस स्थिति का समतापूर्वक न केवल सामना किया वरन् संघ को स्थिरता प्रदान की। आचार्य श्री नानेश द्वारा चयनित युवाचार्य श्री रामेश ने अपनी प्रखर प्रतिभा और दृढ क्रिया के आधार पर साधुमार्गी जैन संघ को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की और अनवरत कर भी रहे हैं, आप श्लांघनीय है। कहा जा सकता है कि आचार्य श्री नानेश का युवाचार्य के रूप में मुनि श्री रामलालजी म.सा. का चयन सर्वाधिक सार्थक एवं सम्यक निर्णय था।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण के पश्चात् कार्तिक बदी ३ वि.सं. २०५६ को युवाचार्य श्री रामेश को उदयपुर में आचार्य पद की चादर ओढाई गई। आचार्य श्री रामेश ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों का अनुसरण करते हुए संघ एवं जिनशासन की गरिमा में जो अभिवृद्धि की है तथा अनवरत कर रहे हैं, वह श्लांघनीय है।

- उमरावमल ओस्तवाल, मुंबई

!! जय गुरू नाना !! !! जय महावीर !! !! जय गुरू राम !!

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म.सा.

निवासी	: देशनोक
पिता का नाम	: श्री नेमचन्दजी
माता का नाम	: श्रीमती गवराबाई
गोत्र	: भूरा
जन्म तिथि	: चैत्र सुदी 14, वि.सं. 2009
दीक्षा तिथि	: माघ सुदी 12, वि.सं. 2031
दीक्षा स्थल	: देशनोक
दीक्षा गुरु	: आचार्य श्री नानेश
दीक्षा के समय उम्र	: 22 वर्ष 9 माह 8 दिन
युवाचार्य पद तिथि	: फाल्गुन सुदी 3, वि.सं. 2048
युवाचार्य पद प्रदान स्थल	: बीकानेर
युवाचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 17 वर्ष 21 दिन
युवाचार्य पद के समय उम्र	: 39 वर्ष 10 माह 10 दिन
युवाचार्य काल में दीक्षा (संतों की)	: 9
आचार्य पद तिथि	: कार्तिक बदी 3, वि.सं. 2056
आचार्य पद स्थल	: उदयपुर
आचार्य पद के समय उम्र	: 47 वर्ष 6 माह 4 दिन
आचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 24 वर्ष 6 माह 6 दिन

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
२१ फरवरी देसनोक माघ शुक्ला १२
आचार्य भगवन युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के
दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर
कोटि-कोटि नमन

राम चमक रहे भानु समाना
गणेशमल दुगड़
मो. 9329454647
ओसवाल कॉम्पलेक्स, नये गुरूद्वारे के पास, पो. मनेन्द्रगढ़,
जि. एमसीबी, छत्तीसगढ, भारत-४९७४४२
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

गुरू रामेश की वाणी जग में महकानी है

तर्जः आओ बच्चो तुम्हें......
स्नेह मिलन पर नव-युवकों, नव संकल्प उठाना है
धर्ममय हो हमारा जीवन, ये अभिमान चलाना है
वन्दे गुरूवरम, रामेश गुरूवरम
पावन अवसर मिला है तुम्हें, पुरा लाभ उठाना है
गुरूवर की हर बात को दिल से अपनाना है
शासन की बढ़े शोभा, कुछ करके दिखाना है
रामेश गुरू का नाम, सारे जग में महकाना है
एकतामय हो संघ हमारा, ऐसा इतिहास रचाना है
धर्म बिना कुछ भी नहीं, कहती पावन जिनवाणी है
धर्म से मिलेगी शांती, रामेश गुरू की वाणी है
गुरूवरों की बातों को हमने कितना माना है
स्वार्थ भरा ये संसार है, अब तक नहीं पहचाना है
संयम पथ पर कदम बढ़ाओ, 'जिनागम' का यही कहना है।
जय भारत ! जय भारत ! जय भारत ही बोलते जाना है।

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सुरक्षता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष | चंदराज सिंघवी राष्ट्रीय अध्यक्ष | डॉ. प्रकाश गोलेछा योजना मंत्री | नरेन्द्र कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.पि. | वसंत जैन राष्ट्रीय संगठन मंत्री | संजय जैन कोर्डिनेटर | सुरेन्द्र कुमार जैन राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

युग निर्माता आचार्य श्री रामेश एक विराट व्यक्तित्व

आचार्य रामेश जिनशासन के ताज हैं
उनकी संयम साधना पर हम सबको नाज है
युग-युग तक आपका शासन सदा जयवंत रहे
सदा मिले छत्र-छाया आपकी यही अंतर्मन की आवाज है।

युग निर्माता युगपुरुष साधना के शिखर पुरुष रत्नत्रय के महान आराधक, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम सामाजिक उत्क्रांति के उद्घोषक, गुणशील संप्रेरक, व्यसन मुक्ति के प्रणेता, परम आगम ज्ञाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर १००८ श्री रामलाल जी म.सा. का जन्म राजस्थान के 'देशनोक' में मां गवरा की कुक्षी से नेमीचंद जी के आंगन में हुआ। बचपन बड़े लाड-प्यार से बीता। बचपन में मित्रों के बीच खेल-खेल में मुनि बनने की बात करते थे। जवाहराचार्य के अनाथी मुनि की पुस्तक पढ़कर मन संकल्पित हुआ। जयपुर में समता विभूति आचार्यश्री नानेश के प्रथम दर्शन में अटूट श्रद्धा जागृत हुई। देशनोक में उन्हीं के पावन चरणों में दीक्षा ली। विश्व की विरल विभूति आचार्यश्री नानेश ने आपको परखा, प्रतिभा को समझा। २२ सितंबर १९९० 'चित्तौड़गढ़' में मुनि प्रवर से विभूषित किया। कठोर संयम के साधक, प्रखर प्रतिभा के धनी, कठोर परिश्रमी, पुरुषार्थी, आत्मार्थी, विरल विभूति आचार्यश्री रामेश को ७ मार्च १९९२ फागुन सुदी तृतीया विक्रम संवत २०४८ को ३९ वर्ष १० माह १० दिन की उम्र में साधुमार्गी संघ की राजधानी 'बीकानेर' के जूनागढ़ राजमहल में ३५ संत, १४० महासतियों एवम हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में प्रातः १०:४१ मिनट पर युवाचार्य की चादर ओढ़ाई गई। १९-२० वर्षों तक लगातार आप आचार्य नानेश के पास रहे। आचार्य नानेश ने पूरी उर्जा आपमें भर दी। युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की निष्पक्षता, न्यायप्रियता, निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति, वीतराग संस्कृति पर दृढ़ आस्था, स्वर्गीय आचार्य देवों द्वारा निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा हेतु उठाए गए चरण चिन्हों पर समर्पण आदि अनेक विशेषताओं को ध्यान में रखकर उन्हें संघ का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन के पश्चात संघ की बागडोर आप बखूबी निभा रहे हैं। राम गुरु ऐसे महान आचार्य जिन्होंने मास खमण की उग्र तपस्या की प्रतिदिन एकासना, सोमवार को मौन, माह में ४ दिन उपवास निरंतर जारी है। युवाचार्य बनने के बाद अब तक ३६८ दिक्षाएं आप दे चुके हैं और निरंतर जारी है। स्व पर कल्याण की साधना में अहर्निश लगे हुए हैं। १६ राज्यों में कठोर परीषह सहन करते हुए जिन शासन की अद्भुत प्रभावना की है और कर रहे हैं।

संयम आपका सक्त है तभी तो लाखों भक्त हैं।
राम गुरू विराट हैं दीक्षाओं का ठाठ है।
आदि जयघोष जन-जन के हृदय में है।

अभी वर्तमान में ४५३ साधु साध्वी का नेतृत्व कर रहे हैं। अनेक मुमुक्षु आत्माएं श्री चरणों में समर्पित होने के लिए लालायित हैं। आचार्य श्री रामेश के प्रवचन व चिंतन के अनमोल साहित्य जन-जन को नई प्रेरणा व ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। अनेक आयाम आचार्य भगवन् ने दिए हैं, जिनमें सर्वप्रथम व्यसन मुक्ती, फिर संस्कार समीक्षा, उत्क्रांति, गुणशील, ज्ञान चेतना, समता सर्व मंगल, ज्ञान आराधना, गुणोत्कीर्तन, संघ समर्पणा आदि अनेक आयाम देकर हर श्रावक-श्राविका को ज्ञानवान, क्रियावान, विवेकवान बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। संयम की उत्कृष्ट पालना इस पंचम आरे में मिसाल है, आचरांग सूत्र आपके जीवन से बोलता है।

हुक्मसंघ के इतिहास में पहली बार बेले-बेले के तपस्वी बहुश्रुत वाचनाचार्य उच्च कोटि के साधक श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. को ब्यावर में उपाध्याय पद प्रदान कर संघ को अनमोल रत्न प्रदान किया।

गुरुकुल की स्थापना भी हुई। आचार्यश्री रामेश के चलते प्रवचन में दीक्षा लब्ध प्रतिष्ठित श्री चंद जी कोठारी रतलाम १९ जुलाई २००९ को दुर्ग में हुई। रतलाम चातुर्मास में सर्वाधिक मास खमण १५१ हुए। १५ दीक्षा एक साथ उदयपुर में ४ फरवरी २००१ को हुई। ११ दीक्षाएं गंगाशहर-भीनासर में एक साथ हुई। पद में रहते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हुलासमल जी संचेती ने मुंबई में आपके श्री चरणों में दीक्षा ली। अपार संपत्ति व ढाई साल की बच्ची को छोड़कर सुमित राठौड़ नीमच ने पत्नी के साथ सूरत में दीक्षा ग्रहण की, यह दीक्षा भारत में ही नहीं पूरे विश्व में चर्चित रही। अनेक उच्च शिक्षित युवक-युवती आपके उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर जैन भगवती दीक्षा ग्रहण की और कर रहे हैं। आपकी प्रेरणा से लाखों लोगों को व्यसन मुक्त कराया गया। आचार्य नानेश के 'संवत्सरी' एकता का उद्घोष जिस दिन सकल संघ तय कर ले, श्वेताबर संघ हो या स्थानकवासी संघ तय कर ले, उसी दिन 'संवत्सरी' मनाने के लिए तैयार है, आचार्य रामेश जी भी उसी विचार पर कायम हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में जैनत्व के मूल अवधारणा पर एक होना जरूरी है। मूलभूत सिद्धांतों को सुरक्षित रखा जाना चाहिए, संथारे और सम्मेद शिखर के प्रसंग पर पूरे जैन समाज ने अपनी एकता दिखा कर मिसाल कायम किया है। इंडिया नहीं हम भारतीयों को भारत ही बोलना चाहिए, राष्ट्रीय संस्कारों का प्रतीक है। 'जैन एकता' के प्रयास में प्रख्यात समाजसेवी, जन-सेवी, राष्ट्रप्रेमी बिजय कुमार जैन का भारतीय व जैन संस्कृति के गौरव में भागीरथी योगदान अत्यंत सराहनीय है।

खुद जीयें सबको जीना सिखाएं,
आओ चलो खुशियां अपनी बांट आएं
- महेश नाहटा नगरी, छत्तीसगढ़, भारत

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Pawan Jain
Mob: 9811041490 / 9811753486
J. J. Paper Sales
E-10/3, Krishna Nagar, Delhi, Bharat-110051
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

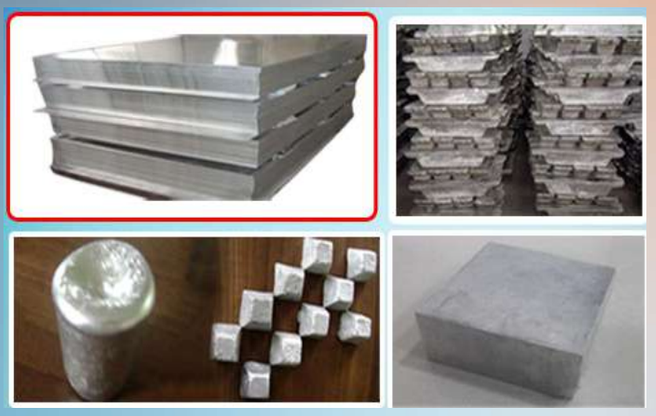

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

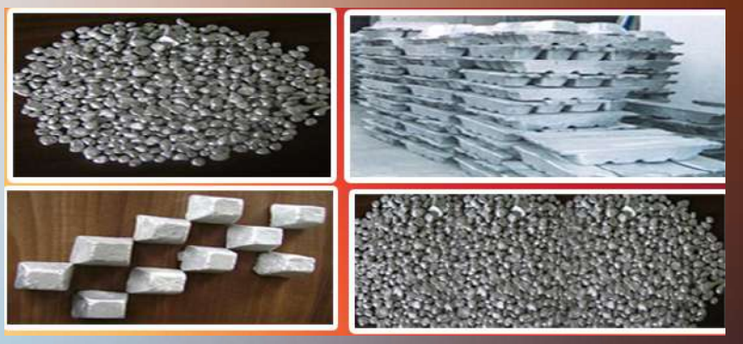

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

'हम' की शक्ति पहचानें, जिनशासन को महकाएँ

आध्यात्मिक जगत में 'मैं' का विराट स्वरूप है 'हम'
'हम' अर्थात अपनापन 'हम' अर्थात एकता।
'हम' अर्थात 'वासुधैव कुटुंबकम'। 'हम' अर्थात समस्त आत्माएं।
जहाँ 'हम' हैं, वहाँ 'मैं' का समर्पण हो जाता है।
जहां 'हम' है वहां संगठन है। जहां 'हम' हैं वहाँ संघ है।
'संघे शक्ति कलीयुगे'।

नन्दी सूत्र में संघ को नगर, चक्र, रथ, सूर्य, चंद्र, पद्म सरोवर, समुद्र, सुमेरू आदि विशेषणों से अलंकृत किया है। संघ की महिमा अपार है। आगमों में 'णमो तित्थस्स' के द्वारा साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका इन चार तीर्थ रूपी संघ की महिमा को उजागर किया है। जिनशासन में 'हम' भावना का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि मोक्ष मार्ग का साधक अपने स्व-कल्याण के साथ ही सभी के कल्याण की भावना रखे, इस हेतु स्वयं प्रभु महावीर ने अपनी अंतिम देशना में उत्तराध्ययन सूत्र के ग्यारहवें अध्ययन 'अहुस्सूयपुज्जं' में साधु के आचार का वर्णन करते हुए इसकी अंतिम गाथा में कहा है-

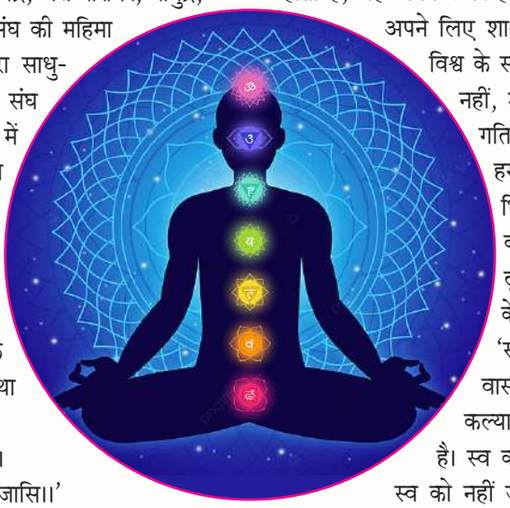

'तम्हा सुय महिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठ गवेसये।
जेण अप्पाणं परं चेव, सिद्धिं सम्पाउणिज्जासि।।'

उपरोक्त गाथा द्वारा 'हम' भावना का महान आदर्श समग्र विश्व को अनुकरण हेतु उद्घोषित किया गया है।

'हम' की शक्ति सर्वोपरि - 'व्यक्ति अकेला निर्बल होता है, संघ सबल होता मानें' संघ समर्पणा गीत की सुंदर पंक्तियाँ हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही हैं, जिस प्रकार एक लकड़ी आसानी से तोड़ी जा सकती है लेकिन वही जब समूह रूप में हो तो उसे तोड़ना दुस्सम्भव है, जिस प्रकार साधारण से समझे जाने वाले सूत (धागे) जब साथ मिल जाते हैं तो वह मजबूत रस्सी का रूप ले लेते हैं और बलशाली हस्ती को भी बांधकर रख सकते हैं, इसी प्रकार जब हम संगठित हो जाते हैं तो दुस्सम्भव कार्य को भी संभव बना सकते हैं। जंगल में बलवान पशु भी समूह में रहे हुए प्राणियों पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं करता, वह उसी को अपना शिकार बनाता है जो समूह से अलग हो जाते हैं। निर्बल से निर्बल भी संगठित होने पर सशक्त एवं सुरक्षित हो जाते हैं और कई बार ऐसा भी देखने में आता है की निर्बलों की संगठित शक्ति के सामने अकेला बलवान भी हार जाता है। सैकड़ों मक्खियां मिलकर बलशाली शेर को भी परेशान कर देती है, एकता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत है 'जाल में फँसे कबूतरों और बहेलिये की कहानी'

बहेलिये द्वारा बिछाये गए जाल में फँसे कबूतर जब सिर्फ स्वयं की मुक्ति के लिए अलग-अलग प्रयास कर रहे थे तो जाल में और अधिक उलझते जा रहे थे लेकिन जब अपने मुखिया की बात मानकर उन्होंने एकतापूर्वक एक साथ अपने पंख फड़फड़ाये तो पूरा जाल लेकर आसमान में उड़ गए और बहेलिये के चंगुल से बच गए, यह है एकता की शक्ति। लोकतंत्र में भी उन्हीं की बात मानी जाती है जो संगठित होते हैं, आज विश्व में वो ही शक्तिशाली एवं सुरक्षित हैं जो एकजुट हैं, संगठित हैं।

जहाँ 'मैं' में सिर्फ स्वार्थ भाव होता है वहीं 'हम' में परमार्थ का विराटतम भाव समाहित है। 'हम' भावना आते ही सारे द्वेष के बंधन खुल जाते हैं। सारे वैर-विरोध के कारण नष्ट हो जाते हैं। 'हम' भाव वाला किसी को कष्ट नहीं दे सकता, उसके मन में दूसरों के दुःख को अपने दुःख जैसा समझने की भावना होती है, वह अपने ऊपर हर प्राणी का उपकार मानता है इसलिए वह जैसा अपने लिए शाश्वत सुख चाहता है, उसका चिंतन होता है कि विश्व के सभी प्राणी अपने है, कोई पराया नहीं, कोई शत्रु नहीं, उसके मन में 'सत्वेषु मैत्रीम्' का अनवरत प्रवाह गतिमान रहता है, यही विश्व शांति का मूल मंत्र है।

हर वस्तु या विषय को जानने व समझने के लिए भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण होते हैं जिसे 'अनेकांतवाद' कहा जाता है। 'मैं' और 'हम' को भी अनेकांत दृष्टि से समझने की आवश्यकता है। आत्मचिंतन के दृष्टिकोण से 'मैं' का चिंतन करना अर्थात 'स्व' का चिंतन, अपने आत्मा का चिंतन, अपने वास्तविक स्वरूप का चिंतन और अपने आत्म कल्याण का चिंतन कर उस हेतु पुरूषार्थ करना होता है। स्व की अनुभूति के बिना सब कुछ व्यर्थ है, जिसने स्व को नहीं जाना उसने कुछ नहीं जाना। 'स्वयं' को जानने वाला ही स्वयं के अनंत गुणमय शुद्ध स्वरूप की सिद्धि कर अनंत आनंद को प्राप्त कर सकता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग अर्थात आत्मा के शुद्ध गुण हैं, जहां 'मैं' अर्थात् आत्मा के शुद्ध गुणों की अनुभूति हो वहाँ 'मैं' का चिंतन पूर्ण रूप से सार्थक है। 'मैं' अर्थात् अपने स्वरूप का अनुभव करते हुए उसकी वर्तमान अवस्था में परतत्त्व के संयोग से उत्पन्न दोषों का समीक्षण करके उन दोषों को दूर कर पूर्ण शुद्ध गुणों से युक्त वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति हेतु पुरूषार्थ, जिसे आत्म साधना कहा जाता है, वह सर्वश्रेष्ठ है, यही स्वचेतना की अनुभूति है, यही ज्ञेय है और यही उपादेय है, यही आत्म धर्म है, यही समस्त धर्म का सार है।

लेकिन जब 'मैं' का चिंतन विकारयुक्त हो, क्रोध-मान-माया-लोभ आदि कषायों से कलुषित हो, राग-द्वेष की गंदगी से दूषित हो, तो अनुचित है, वह हेय है, त्यागने योग्य है, दूसरों को हानि पहुंचाकर स्वयं की भौतिक वासनाओं की पूर्ति करना लोक व्यवहार में भी सबसे बड़ा पाप है, अपने भौतिक स्वार्थ के लिए दूसरों का अधिकार छीन लेना निंदनीय है, कोई भी व्यक्ति दूसरों को तभी हानि पहुंचाता है जब उसके मन में सांसारिक विकारी 'मैं' के विचारों का अधिकार हो जाता है, वह क्रोध के वश, अहंकार के वश, माया के वश, लोभ के वश, प्रतिष्ठा की कामना के वश या प्रतिशोध के वश में आकर दूसरों को कष्ट देने में भी पीछे नहीं रहता और जगत के जीवों को आघात पहुंचाते हुए अपनी आत्मा के सद्गुणों का घात करके स्वयं भी अशांति एवं घोर दुःखों का भागी बनता है।

जैन दर्शन के अनुसार हमारी आत्मा शाश्वत है, **शेष पृष्ठ २५ पर...**

पृष्ठ २४ से... अनादि काल से इसने अनंत जन्म-मरण किए हैं और इन अनंत भवों में हमारी आत्मा ने लोक के सभी जीवों के साथ हर तरह के संबंध किये हैं, हर जन्म में हमारे ऊपर अनगिनत जीवों का असीम उपकार रहा है और अनंत भवों के हमारे जन्म-मरण हिसाब से हमारे ऊपर हर जीव का असीम उपकार रहा हुआ है, हम अगर सामान्य दृष्टि से भी सोचें तो हम हमारा छोटा सा जीवन भी अनगिनत जीवों के उपकार एवं सहयोग से ही जी पा रहे हैं, अगर संसार के दूसरे जीव हमारे शत्रु बन जाएं तो कुछ पल भी हम जी नहीं पाएंगे, इस प्रकार संसार के हर जीव का हमारे ऊपर ऋण है और उन सभी के हित की भावना और हित का कार्य करके ही हम उस ऋण से मुक्त हो सकते हैं, इसीलिए जैन धर्म सम्यक् रूप से समझने वाला व्यक्ति जीव हिंसा से दूर रहना अपना सर्वोपरि कर्तव्य एवं सर्वोपरि धर्म समझता है, आइए 'हम' भावना के व्यापक स्वरूप को जीवन में अपनाकर समग्र विश्व में शांति के निर्माण में सहभागी बनें।

'हम' की भावना से प्रगति का जीता-जागता उदाहरण है जापान- अपने चारों तरफ फैले हुए समुद्र की भयानक आपदाओं को 'जापान' प्रति वर्ष झेलता है और जिसने पिछली एक शताब्दी में अनेक भयानक भूकंप एवं सुनामियों की विनाशलीला भी झेली है लेकिन वहाँ के निवासियों ने आपसी एकता एवं अपनत्व की भावना के बलबूते 'जापान' को दुनिया के अति विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा कर दिया है। 'जापान' में किसी भी व्यक्ति को हानि होने पर जापानी लोग उसे अपना मानकर उसकी सहायता करके सक्षम बना देते हैं, इसीलिए आज 'जापान' किसी भी बात पर दूसरों पर निर्भर नहीं है।

विश्व के इतिहास पर करें दृष्टिपात - आज हम भारत सहित विश्व के देशों का इतिहास देखें तो पता चलेगा कि जब-जब 'मैं' और 'मेरा' का संकुचित भाव हावी हुआ तब-तब विनाश दृष्टिगोचर हुआ। रामायण, महाभारत आदि में वर्णित महाविनाश में स्वार्थपूर्ण 'मैं' ही कारण रहा। स्वार्थपूर्ण 'मैं' की क्षुद्र भावना में बिखर कर भारत आदि अनेक देश मुगलों और अंग्रेजों के गुलाम बने और सदियों तक घोर कष्ट सहा, आज जो भी विकसित देश नजर आ रहे हैं वे सभी 'हम' भावना की शक्ति से ही सशक्त और समृद्ध बने हैं। पूर्ववर्ती मध्यकाल में देश के विभिन्न राज्यों के नरेश आपस में छोटे-छोटे स्वार्थ या प्रतिशोध की भावना से एक दूसरे राज्य पर आक्रमण किया करते थे, आपस में एकता नहीं होने का लाभ विदेशी लुटेरों एवं आक्रमणकारियों ने उठाया, जिसके कारण सभी को महाविनाश झेलने पड़े और देश को सदियों तक पराधीन रहना पड़ा, लेकिन जैसे ही 'हम' की भावना जगी और संगठित हुए तो गुलामी की सारी जंजीरें टूट गईं। बीती हुई करीब १० सदियों की तुलना में आज 'भारत' देश काफी सुरक्षित और सशक्त है तो उसका कारण है देश की ५६५ रियासतों का एकजुट होकर स्वतंत्र 'भारत' में विलय। अनेक भाषाओं एवं विभिन्न भौगोलिक स्थितियों के होते हुए भी हम एकजुट 'भारत' के होने से ही प्रगति कर रहे हैं और करते रहेंगे, आज देश को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उसका बहुत बड़ा कारण राजनेताओं के स्वार्थरूपी 'मैं' की वजह से १९४७ में देश का विभाजित होना है, हमसे विभाजित हुए राष्ट्र हमारे देश को निरंतर बहुत बड़ी हानि पहुंचा रहे हैं। विकास में लगने वाली हमारी क्षमता का बहुत बड़ा हिस्सा उनसे अपनी रक्षा में लगाना पड़ रहा है, जिसके कारण यथेष्ट विकास नहीं हो पा रहा है, हमसे विलग हुए राष्ट्र यदि हमसे शत्रुता छोड़ कर परस्पर एकता और सहयोग का वातावरण निर्माण करें तो हमारी एवं उनकी सभी की विशेष प्रगति हो सकती है, सुखी एवं समृद्ध बन सकते हैं।

आपस में एकता नहीं होने से जिनशासन को पहुंची बड़ी क्षति - शासनेश प्रभु महावीर के निर्वाण के कुछ वर्षों पश्चात जैन धर्मानुयायी विभिन्न सम्प्रदायों में विभाजित हो जाने के कारण जैन समाज को भारी क्षति उठानी पड़ी। जैन धर्म का मौलिक इतिहास देखने पर पता लगेगा कि आपस में एकता के अभाव के कारण, हमारे सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी श्रेष्ठतम सिद्धांतों को नहीं समझ पाने से अन्य धर्मावलम्बियों ने द्वेषवश जैन समाज पर अनेक प्रकार के घोर अत्याचार एवं सामूहिक नरसंहार तक किये, जिसके कारण बहुसंख्यक जैन समाज आज अल्पसंख्यक स्थिति में आ गया। अपने स्वार्थ एवं अहंकार में अंधा होने पर व्यक्ति घनिष्ठ प्रेम, आत्मीय सम्बन्ध, सिद्धांत, नैतिकता आदि सब कुछ भुला देता है और अपने परम उपकारी तक का भी अनिष्ट कर डालता है, हमें इतिहास से सबक लेकर उन कारणों से दूर रहकर उज्जवल भविष्य के लिए कार्य करना है।

आपसी एकता से महक सकता है जिनशासन: जिन शासन को महकाने के लिए जगायें 'हम' का भाव-जैन धर्म इस विश्व का सबसे महान धर्म है, एक ऐसा धर्म जो विश्व के हर जीव को अपना मानता है, **शेष पृष्ठ २६ पर...**

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
'अहिंसा' और 'जैन एकता'
हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित
परस्परोपग्रहो जीवानाम
MANOHAR LAL KATHED JAIN
LIC. AGENT
Mob: 9425918164
11, Jawahar Marg, Nagda, Madhya Pradesh, Bharat - 456335

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Narendra Daga
Managing Director
Nakasu International Pvt.Ltd.
Importer/Agent Deal In: CRGO, CRNGO Electrical Steel, PPGI Coils
Ex.Japan, Korea, China, USA
203-Time House, 5-Community Center,
Wazirpur Commercial Complex, Delhi, Bharat -110052
Res. : - Flat No.B-54, Sangam Apartment, Sector-9, Plot No. 23, Near Rajapur Village Market, Rohini, Delhi, Bharat - 110085 email : nakasudelhi@gmail.com
Mob : 9810246028/ 9310072606

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ २५ से... अपने समान मानता है जो हर प्राणी के दु:ख को अपने दु:ख के जैसा ही समझता है, जो हर जीव की रक्षा को धर्म मानता है। ऐसा धर्म जिसको अपनाने से सारे जीवों में वैर-विरोध समाप्त हो सकता है, एक ऐसा धर्म है जिसका संदेश है किसी को मत सताओ। ऐसा महान धर्म जिसका पालन निर्धन से निर्धन व्यक्ति से लेकर संपन्न से सम्पन्नतम व्यक्ति भी कर सकता है, ऐसा धर्म जो एक छोटे से त्याग से भी व्यक्ति को शाश्वत सुख के मार्ग पर आगे बढ़ा देता है, जिसका पालन दुनिया का ही संज्ञाशील प्राणी कर सकता है, जो सकल विश्व का धर्म है, ऐसा महान विश्व शांतिकारी जैन धर्म अल्पसंख्यक स्थिति में पहुंच गया है। ६४ इंद्र एवं असंख्य देव-देवी, जिन तीर्थंकर के उपदेश सुनने के लिए लालायित रहते हैं, ऐसे महान जैन धर्म का अनुसरण करने वाले व्यक्ति सिर्फ कुछ प्रतिशत ही हैं, यह अत्यंत ही चिंतनीय विषय है। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, समता, सदाचार, 'जियो और जीने दो', 'परस्परोपग्रहो जिवानाम' आदि अमर सिद्धांतों के होते हुए भी विश्व पटल में शामिल होते दिखाई दे रहे हैं। हिंसा, द्वेष, अशांति, स्वार्थ, कुव्यसन, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि का प्रभाव बढ़ रहा है, क्या इसमें हमारा बिखराव भी बहुत बड़ा कारण नहीं रहा? आपस में 'एक' नहीं होने की वजह से हम जीवदया, अहिंसा, करूणा, समता, सदाचार, नैतिकता के महान सिद्धांतों को जन-जन तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं, इसके कारण विश्व में फैले हुए जीव हिंसा, मांसाहार, दुराचार, दुर्व्यसन आदि को मिटाने में हम सक्षम नहीं बन पा रहे, जिन शासन में एक से बढ़कर एक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका हुए हैं और वर्तमान में भी चतुर्विध संघ में अनेक रत्न हैं, अगर यह सभी 'संगठन' की शक्ति 'हम' की शक्ति को समझ लें तो प्रभु महावीर के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार कर सारे विश्व में प्रेम, शांति और सहकार का वातावरण बनाया जा सकता है। पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी आपस में जुड़ जाते हैं, तो 'खामेमि सव्वजीवे' एवं 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' का सारे जग को संदेश देने वाले 'जैन' क्या संगठन के सूत्र में नहीं बंध सकते? संकल्प करें कि हमें एक महान लक्ष्य को प्राप्त करना है। 'सत्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदं' का भाव सारी दुनिया में उद्घोष करने वाले हम छोटे से अहंकार एवं स्वार्थ के पीछे कभी नहीं पड़ेंगे। चंडकौशिक विषधर, क्रुर देव संगम, घोर हत्यारे अर्जुन माली एवं रौहिणेय चोर को भी क्षमा कर उनको सत्पथ पर लाकर उद्धार करने वाले करूणा निधान प्रभु महावीर के हम उपासक हैं, हमारे आदर्श हैं चींटियों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले धर्मरूचि अणगार और कबूतर की रक्षा के लिए शिकारी को अपने शरीर का मांस काट कर दे देने वाले राजा मेघरथ, हमारा चिंतन हो कि ऐसे महान जैन धर्म के अनुयायी, जो आत्म सिद्धि के लिए संसार के सारे मनमोहक सुखों का त्याग करने में भी पीछे नहीं रहते, सर्वोत्कृष्ट सिद्धांतों एवं विचारों के धनी हम अहंकार, क्रोध, प्रतिशोध या पद-प्रतिष्ठा आदि किसी भी लोभ एवं नश्वर स्वार्थ के वशीभूत होकर अपनी आत्मा को कलुषित नहीं करेंगे। विश्व कल्याणकारी 'जिनशासन' की प्रभावना के लिए हम सारे वैर-विरोध को भूलाकर आपस में आत्मीयता एवं विश्व मैत्री का सारे विश्व के सामने उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। वीतराग प्रभु द्वारा प्ररूपित सिद्धांतों को पूर्ण रूप से जीवन में अपनाएंगे, जिससे हमारा जीवन दूसरों के लिए आदर्श बने, हमारा चिंतन हो कि हमारे किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत स्वार्थ की वजह से 'जिनशासन' को कहीं हानि तो नहीं पहुंच रही है, यदि हमारी किसी भी छोटी सी गलती से भी 'जिनशासन' को कोई क्षति पहुँच रही है तो तुरंत उसका सुधार करें।

परस्परोपग्रहो जीवानाम

सभी जैन धर्मानुयायी यदि एक दूसरे के सद्गुणों का सम्मान करते हुए उन अच्छाईयों को नि:संकोच अपनाने का सिलसिला प्रारम्भ करें और 'मैं' नहीं 'हम' की पवित्र भावना के साथ जैन धर्म के कल्याणकारी सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाए तो पुन: 'जिनशासन' को समग्र विश्व में पूर्ववत गौरवशाली प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है, हर अच्छे कार्य का दुनिया पर प्रभाव पड़ता ही है, कोशिश जरूर कामयाब होती है, अगर दुनिया में हमारे कार्यों का एक प्रतिशत लोगों पर भी प्रभाव पड़ गया तो करोड़ों नए लोग सच्चे धर्म से जुड़ जायेंगे। आइये हम दृढ़-संकल्प करें कि हम आपस के मतभेदों को दूर रखते हुए संगठन के महत्त्व को जानकर एकजुट होकर प्रयास करें, जैन धर्म के शुद्ध सिद्धांतों को अपने जीवन में पूर्ण रूप से अपनाते हुए समग्र विश्व में 'जिनशासन' को महकायें।

- अशोक नागोरी, बैंगलुरू
कर्नाटक, भारत

91.6 Hallmark
Gold Jewellery
& Silver Ornaments
राम चमक रहे भानु समाना
आचार्य भगवन युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन
Saraf Kantilal Vimalkumar
CHHAJED JEWELLERS
PURE & PRECIOUS
BABULAL CHHAJED JI KA DIVYA AASHISH
Kantilal Chhajed - 9425103380
Vimal Chhajed - 9425103370 Saurabh Chhajed - 9630777097
Alok Chhajed - 9893013233 Rohan Chhajed - 9479660009
130, Chandni Chowk Corner, Ratlam, Madhya Pradesh, Bharat- 457001 Ph: 07412-234986, 231137

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Ashok Kumar Churiwal
Mob. : 9435124862
Mission Road, Ward Number 3,
P .O . Barpeta Road, Assam, Bharat- 781315

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

२१ फरवरी देसनोक माघ शुक्ला १२

आचार्य भगवन युगपुरूष रामलाल जी म.सा.
के दीक्षा दिवस २१ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन

राम चमक रहे भानु समाना

Rajendra Kumar Mer
Mob: 8949424405
Rahul Mer
Mob: 9414101896/ 8690363638

THE WOOD'S
POWERED BY RAJASTHAN PLYWOOD

RAJASTHAN PLYWOOD
A Decorative Hub For Your All Interior Needs

Rahul Complex, Mg Hospital, Near Upadhyay Park,
Banswara, Rajasthan, Bharat -327001.

जिनशरणं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर
हार्दिक शुभकामण्नाएं

Vimal Jain
Mob: 9820402573
Vipul Arts

Shop No. 24, World Trade Center,
Cuffe Parade, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400005
दूरध्वनि: 022-22181624, Fax: 022-22182419
अणुडाक: vipulartsinfo@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

अयोध्या ५ तीर्थंकरों की भी जन्मभूमि है ४ भव्य जैन मंदिर बनाए जा रहे हैं

अयोध्या के भव्य राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की धूमधाम संसार भर में हो, लेकिन अयोध्या के आंगन में अकेले श्रीराम ही नहीं खेले। धर्म की इस उर्वर भूमि ने पांच तीर्थंकरों को भी जन्म दिया, इसी सरयू नदी ने उन्हें भी मनुष्य से परमात्मा बनते देखा। २४ तीर्थंकरों में सबसे पहले तीर्थंकर श्री ऋषभदेव, दूसरे श्री अजितनाथ, चौथे श्री अभिनंदन नाथ, पांचवें श्री सुमतिनाथ और चौदहवें श्री अनंतनाथ। इस प्रकार जैन परंपरा में भी अयोध्या पांच गुना अधिक पवित्र है। अयोध्या, रायगंज में तीर्थंकरों के स्थान पर एक नहीं, चार विशाल मंदिरों के निर्माण की हलचल पर किसी की दृष्टि नहीं गयी, ऐसा क्यों?

इनमें एक है तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत का मंदिर। मान्यता है कि भरत समेत ऋषभदेव के १०० पुत्र थे, उनका महल भी बगल में बन रहा है। पाताल, पृथ्वी और स्वर्ग लोक, सृष्टि के विस्तार हैं तो तीन लोक मंदिर भी सटकर ही बन रहा है। चौथा निर्माण- तीस चौबीसी मंदिर, जहां भूत, वर्तमान और भविष्य ७२० मूर्तियां में एक साथ दिखाई देंगे। अयोध्या के नवनिर्माण में यह अध्याय भी शीघ्रता से जुड़े, इसके लिए दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष रविंद्रकीर्ति स्वामी और गणिनी प्रमुख ज्ञानमतिजी अयोध्या में विराजमान हैं। पिछले साल उनकी ही प्रेरणा से सहयोग जुटाने के लिए अयोध्या 'तीर्थ प्रभावना रथ' राजस्थान से होकर लौटा है।

जैन परंपरा में दो ही शाश्वत तीर्थ हैं-पहला अयोध्या और दूसरा सम्मेद शिखर, जहां से तीर्थंकरों ने मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त किया। भगवान राम के वंशजों में अनेक चक्रवर्ती सम्राट हुए, किंतु जैन परंपरा अपने आराध्यों को चारित्र चक्रवर्ती कहती है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव तो विश्व शांति के प्रथम अवतार ही हैं, एक प्रकार से अयोध्या इस महान परंपरा की गंगोत्री है। जानकारी हो कि चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ने भी कुछ समय यहां बिताया था। अयोध्या की टक्कर का दूसरा प्राचीन नगर धरती पर ढूंढना मुश्किल है, जहां इतिहास के भयावह थपेड़ों को झेलते हुए महान पूर्वजों से जुड़ी हजारों वर्ष पुरानी स्मृतियों को क्रमबद्ध रूप से सहेजकर रखा गया, इसमें कई पीढ़ियां खपी हैं।

संसार में दुर्लभ हैं जिनेन्द्र देव व सम्यग्दयर्शनः अक्षयसागर

गोरेगांव के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में समवसरण अनुष्ठान

मुंबईः श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर गोरेगांव ट्रस्ट मंडल एवं समस्त गोरेगांव दिगम्बर जैन समाज की ओर से समवशरण चौबीस तीर्थंकर विधान समारोह का आयोजन किया गया। गोरेगांव पश्चिम के जवाहर नगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में विभिन्न अनुष्ठान किए गए। पुज्य संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के शिष्य पु. मुनिश्री अक्षय सागर जी, मुनिश्री अचल सागर जी एवं ऐलक जय सागर जी महाराज के सानिध्य, बा. ब्र, संजीव भैया कटनी के मार्गदर्शन में समवसरण की धर्म प्रभावना हुयी। समवशरण विधान के तीसरे दिन बड़े भक्ति-भाव और धर्म-प्रभावना के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर मुनिश्री ने आंखों के डॉक्टर का उदाहरण देते हुए बताया कि हमें सबसे पहले इस बात का निर्णय करना है कि जिसे हम अपना गुरु या भगवान मान रहे हैं वह स्वयं मार्ग बताने में सक्षम है या नहीं, हमें इसका ज्ञान कर लेना चाहिए, जैसे नेत्र रोग होने पर हम नेत्र रोग विशेषज्ञ के पास जाते हैं और जाने पर पता चलता है कि वह डॉक्टर स्वयं ठीक से देख पाने में सक्षम नहीं, उसके पास जाने से क्या लाभ? उसी प्रकार संसार में देव तो हजारो हैं, पर उनमें से कौन सच्चा देव है उसका निर्णय करना पड़ेगा, तभी हम सही मार्ग पर बढ़ सकते हैं, सभी धर्मों में मुक्ति तो बताई गई है पर मुक्ति का मार्ग केवल जैन धर्म में बताया गया है, क्योंकि जैन धर्म में ही अरिहंत और सिद्ध की आराधना की जाती है, क्योंकि संसार में जिनेन्द्र देव व सम्यग्दर्शन सबसे दुर्लभ हैं, इसे प्रात करने के लिए कई जन्मों का पुण्य लगता है, हमें यह पता करना चाहिए कि कोई देव वीतरागी है की नहीं, इसकी पहचान करते हुए उनके बताए सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए, तभी संसार के परिभ्रमण से मुक्ति मिल सकती है, मोक्ष या निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।

श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में गुरुसप्तमी महापर्व पर उमड़ा आस्था का सैलाब

दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के १९७ वीं जन्म जयंती एवं ११७ वीं पुण्यतिथि मनाई गई

राजगढ़/धार: श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) श्री मोहनखेडा महातीर्थ के तत्वाधान में दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की १९७ वीं जन्म जयंती एवं ११७ वीं पुण्यतिथि 'पंचान्हिका महोत्सव' १५ से १९ जनवरी तक बड़े ही हर्षोल्लास एवं पूजा अर्चना के साथ मनाया गया। मोहनखेड़ा महातीर्थ परिसर को विद्युत सज्जा के साथ सजाया गया था, पुरे जिन मंदिर परिसर व दादा गुरुदेव के समाधि मंदिर परिसर को पुष्प सज्जा व विद्युत सज्जा के साथ सजाया गया था। गुरु सप्तमी के अवसर पर श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में आने वाले सभी गुरुभक्तों को आवास, भोजन, यातायात, पार्किंग आदि की सभी सुविधाएं प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ट्रस्ट मण्डल के द्वारा उपलब्ध कराई गई, साथ ही प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष निःशुल्क चाय एवं नास्ते के स्टाल भी लगाये गये। पुरे देश भर से हजारों गुरुभक्त अपनी श्रद्धा, आस्था और विश्वास को लेकर दादा गुरुदेव के चरणों में अपना शीष झुकाने के लिये गुरु सप्तमी महापर्व पर पधारे जिसमें मुम्बई, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान, मध्यप्रदेश, मालवांचल,

उत्तरांचल सहित कई प्रदेशों के गुरुभक्त श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पर दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. दर्शन वंदन पूजन के लिये मोहनखेड़ा पहुंचें। जनजन की आस्था के केन्द्र श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पर कई राजनैतिक हस्तियों का भी आगमन महापर्व गुरुसप्तमी पर हुआ। पौष सुदी पंचमी से निरंतर सभी गुरुभक्त शत्रुंजयावतार प्रभु श्री आदिनाथ भगवान व दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की वाशक्षेप पूजा व केशर पूजा के लिये लम्बी-लम्बी कतारों में लगकर अपनी पूजा अर्चना के लिये इंतजार करते देखे गये। कहा जाता है कि दादा गुरुदेव के दरबार में जो भी भक्त अपनी झोली फैलाकर आता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, अपनी झोली भरकर ही आनन्द की अनुभुति के साथ अपने आत्म कल्याण की कामना करता है। गुरु सप्तमी महामहोत्सव के अवसर पर प्रातः ५ बजे से दादा गुरुदेव की १९७ वीं जन्म जयंती पर दादा गुरुदेव का पालना द्वारोघटन के साथ लाभार्थी परिवार के द्वारा झुलाया गया, तत्पश्चात् वासक्षेप पूजा, अभिषेक, प्रक्षाल, केसर, फुल, आंगी पूजा आदि के साथ दोपहर में दादा गुरुदेव की गुरुपद महापूजन का आयोजन हुआ। गुरुगुणानुवाद सभा का आयोजन धर्मसभा मण्डप में किया गया। श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ द्वारा गुरु सप्तमी महापर्व पर आये हुए सभी गुरुभक्तों के लिये स्वामीभक्ति का आयोजन भी किया गया। रात्रि में दादा गुरुदेव की महाआरती लाभार्थी परिवार द्वारा उतारी गई। रात्रि में आरती पश्चात् रंगारंग भक्तिभावना का आयोजन रखा गया। तीर्थ पर विराजित आचार्य श्री ने दादा गुरुदेव के जीवन चरित्र पर व्याख्यान माला के तहत प्रवचन वाणी का श्रवण कराया गया। रात्रि में चढ़ावों की जाजम के साथ रंगारंग भक्ति भावना का आयोजन संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता एण्ड पार्टी द्वारा पेढ़ी ट्रस्ट के तत्वाधान में किया गया।

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ फरवरी से चलेगा अभियान, २८ एम्बुलेंस में ११२ जनों का स्टाफ मेडिकल किट लेकर निकलेगा सड़कों पर

प्रदेश के असहाय, बीमार व पीड़ितों को अपनाएगी 'अपना घर' संस्था

भरतपुरः शहर की 'अपना घर' संस्था २९ फरवरी से ५ मार्च तक प्रदेश भर में एक विशेष अभियान चलाएगी, इसमें असहाय, बीमार और आश्रयहीन लोगों को प्रदेश के विभिन्न 'अपना घर' आश्रमों में बसाया जाएगा, यहां उन्हें उपचार समेत सभी जरूरी सुविधाएं निशुल्क मुहैया कराई जाएंगी। 'अपना घर' के संस्थापक डॉ. बी. एम. भारद्वाज ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा बताया कि प्रदेश के सभी संभागों में चलाए जाने वाले इस अभियान का उद्देश्य आश्रयहीन, असहाय व बीमार पीड़ित मुक्त राजस्थान है, इसमें २८ एम्बुलेंस में ११२ जनों का स्टाफ रहेगा, सात प्रभारी रहेंगे, जो मेडिकल किट एवं वस्त्र आदि साथ लेकर निकलेंगे।

मनोरोगियों को चिह्नित करने का काम शुरूः कोई भी आश्रयहीन एवं असहाय संसाधनों के अभाव में दम नहीं तोड़े, इसके लिए प्रदेश भर में यह अभियान शुरू किया जा रहा है। रेलवे स्टेशन, धार्मिक स्थल, बस स्टैंड एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों के आसपास यह अभियान खास तौर पर चलेगा। ऐसे लोगों को चिह्नित किया जा रहा है, जो मंदबुद्धि या मनोरोगी हैं और उनका जीवन सड़कों पर गुजर रहा है। बीमारी, दुर्घटना या अन्य किसी कारण से स्वयं को भी संभालने में असमर्थ हो जाते हैं, ऐसे लोगों को 'अपना घर' में सेवा व उपचार मिलेगा।

कार्यः

- २४ साल से सेवा में जुटा है अपना घर
- ६१ शाखाएं (आश्रम) हैं इस संस्था के
- १२७०० लोग भर्ती हैं इन आश्रमों में
- २२ आश्रम राजस्थान में हैं संचालित
- ५५०० से अधिक लोग हैं भरतपुर आश्रम में
- ४२ हजार प्रभुजी अब तक रेस्क्यू किए जा चुके हैं।

भविष्य की योजना

प्रदेश के सभी संभागों पर अभियान का आगाज होने के बाद इसे जिला और फिर तहसील स्तर पर चलाया जाएगा, इसमें पुलिस का भी सहयोग

लिया जाएगा। 'अपना घर' के संस्थापक डॉ. बी.एम. भारद्वाज ने बताया कि यदि कहीं अधिक एम्बुलेंस की जरूरत पड़ती है तो एम्बुलेंस एसोसिएशन से बात कर ५० से १०० एम्बुलेंस भी अभियान के तहत चलाई जाएगी, जिससे प्रदेश में असहाय, बीमार और लावारिसों से मुक्त हो सके।

- शान्ति लाल सांड, बेंगलुरू, कर्नाटक, भारत

स्वाध्यायी बनने से महान लाभ

- कर्मों की निर्जरा होती है।
- जिनवाणी का प्रचार और प्रसार होता है।
- शुद्ध क्रियाराधना का अभ्यास करने और कराने से कर्मों का क्षय होता है।
- प्राणीमात्र के प्रति वैर-विरोध समाप्त कर मैत्री भाव उत्पन्न होता है।
- अनेक स्वधर्मी बन्धुओं से सम्पर्क बढ़ता है, जिससे स्नेह सद्भाव और संगठन की भावना को सुदृढ़ होती है।
- स्वाध्याय से स्व और पर दोनों का कल्याण होता है।
- जैन दर्शन के बारे में विचारों के आदान-प्रदान का स्वर्ण अवसर मिलता है।
- सभी क्षेत्रों में नैतिक उत्साह और चेतना जागृत होती है।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में अनुभव बढ़ता है, चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है।

- महेश नाहटा, नगरी (छ.ग.), भारत

'जैन एकता' से ही होगा
जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Kumar Pal Mehta
Mob: 9958719999
Member: Central Advisory Board on Disability
Ministry of Social Justice & Empowerment
Govt. Of India
A 94, Wazirpur Industrial Area, New Delhi, Bharat - 110052
Email: veetragtraders@gmail.com

'जैन एकता' से ही होगा
जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Goldy Jain
Mob: 98118 11144 / 99118 11144 / 9811811156
H No 260, Gali No 17, Gulab Vatika,
Main Loni Road, Near Metro Pillar No 47,
Opposite Delhi International School, Ghaziabad,
Uttar-Pradesh, Bharat 201102

जैन साधु की शुद्ध भिक्षा विधि

जैन साधु सादा पानी नहीं पीते, वे जिस तरह का पानी लेते हैं उसकी विधि इस तरह है:-

➡ जिस पानी से चावल, दाल इत्यादि धोयें (धोवन पानी) वह पानी फेकें नहीं एवं सुखे बर्तन में जमीन पर सुखी जगह पर रख सकते हैं।

➡ चावल का मांड (पसीया) सुखे बर्तन में, सुखी जगह जमीन पर रखा जा सकता है।

➡ सुबह के बासी बर्तन, ग्लास-लोटा बगैरह यदि राख से धोते हो, उसका पहला पानी अलग सुखी जगह रख सकते हैं।

➡ बर्तन धोने के लिए सर्फ की जगह राख ले सकते हैं। राख के उपयोग से पानी की बचत होती है।

➡ प्रतिदिन नियमित समय पर जितना भोजन बनता है उस बने हुए भोजन को नमक, पानी, विद्युत उपकरण, अग्नि, कच्ची सब्जी, फल से दूर रखना और सुखी जगह पर रखना।

क्या दे सकते हैं:-

रोटी, सब्जी, दाल, चावल, अचार, गुड़, इत्यादि चावल का धोया हुआ पानी, दाल का धोया हुआ पानी, चावल का मांड।

क्या नहीं करना चाहिए:-

- साधुओं के लिए जल्दी एवं ज्यादा नहीं बनाना।
- साधुओं के लिए नई चीज नहीं बनाना।
- साधुओं के लिए बर्तन धोने में रोजाना की अपेक्षा ज्यादा पानी नहीं लेना।
- जिस बर्तन को नहीं धोने हों, उसे साधु के लिए राख आदि से बर्तन नहीं धोना, साधुओं के लिए पानी गरम नहीं करना।

साधुओं को भिक्षा देते समय ध्यान में रखें:-

- साधुओं को भोजन देने के लिए हाथ नहीं धोना।
- सेल की घड़ी पहनी हों या मोबाईल पास में हो तो साधु को भोजन, धोवन पानी एवं गरम पानी नहीं देना।
- साधुओं को भिक्षा देते समय लाईट, पंखा आदि का स्विच बन्द या चालु नहीं करना।
- गीले हाथों से धोवन पानी या भोजन नहीं देना।
- साधुओं को भिक्षा देते समय वनस्पति एवं सादे पानी से अपने आपको दूर रखना।
- जलता हुआ गैस व चुल्हे पर रखी वस्तु नहीं देना एवं चालु गैस चुल्हे को नहीं छुना।
- घुटने की ऊँचाई से नीचे से साधुओं को भोजन देना एवं साधुओं को देते समय कोई भी चीज एक, दाना या एक बूंद भी घुटने के ऊपर से ना गिरे इसका ध्यान रखना।
- जैन साधु जहाँ खाने आदि का सामान पड़ा हो उसे देखे बिना भिक्षा नहीं ले सकते, अत: उन्हें सम्मान पूर्वक रसोई में ले जाना तथा जल्दबाजी या हड़बड़ी किये बिना उन्हें इतना ही देना जिससे पीछे वापस बनाना ना पड़े।

- महेश नाहटा, नगरी (छ.ग.), भारत

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

B.R.Nahata
भ्रमणध्वनि: 09427013991

Vikash Nahata
भ्रमणध्वनि: 9427013992

Indra devi Nahata
Laksha Nahata
Prerna Nahata
Vansh Nahata

VIKASH
ENGINEERING INDUSTRIES
Manufacturer Of :- Producer Gas Plant (Gassifire)
Industrial Furnaces, Ovens Ceramic Kilns
Shuttle Kilns & Dryers Combustion Equipments.
Kadi Rolling Mill Compound, Behind Geb Substation, Kadi-Kalol Road, Kadi, Gujarat, Bharat-382715. Ph: 02764-262063 | Emai: nahata.br@rediffmail.com
Web: www.gassifire.com

'जैन एकता' से ही होगा
जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Mahavir Parshad Jain
उपाध्यक्ष- बाहुबली आध्यात्मिक अनुसंधान ट्रस्ट हरियाणा
आभूषण - व्यवसाय
Mob: 98100 26550
3, Center Road, Jangpura, Bhogal, New Delhi, Bharat - 110014
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

अयोध्या प्राचीन जैन संस्कृति का केंद्र

अयोध्या प्रभु रामचंद्र की जन्म भूमि है यह ऐतिहासिक सत्य है। भगवान रामचंद्र जी का इतिहास ५००० वर्ष से अधिक पुराना है, अयोध्या नगरी जैन धर्म के पांच तीर्थकरों की जन्मभूमि है। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव जी जन्मभूमि है, द्वितीय तीर्थंकर अजीतनाथ, चौथे तीर्थंकर अभिनंदननाथ जी और पांचवें तीर्थंकर सुमतीनाथ और १४वें तीर्थंकर अनंतनाथ जी, इस तरह अयोध्या नगरी अत्यंत प्राचीन है, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हजारों वर्ष पूर्व हुए।

वाराणसी जिसको काशी या बनारस कहा जाता है, यहां सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी और २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की जन्मभूमि है। अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक दृश्य से अधिक महत्वपूर्ण हस्तिनापुर नगरी में १६वें तीर्थंकर शांतिनाथ जी १७ में तीर्थंकर कुन्थूनाथ जी और १८ वें तीर्थंकर अरहनाथ जी का जन्म हुआ।

भारत के महान दिगम्बर जैन साध्वीजी ग्रंथकार गाणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी, आर्यिकारत्न चंदनामती माताजी, स्वामी रविन्द्र कीर्ति जी हस्तिनापुर में जम्बू द्वीप की निर्मात्री सिद्ध क्षेत्र मांगी तुंगी में अखंड प्रस्तर में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी की १०८ फीट मूर्ति निर्माण कर विश्व में ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया हजारों वर्ष पुराने ग्रंथ से ज्ञात होता है कि अयोध्या वाराणसी हस्तिनापुर जैन धर्म और जैन समाज के केंद्र रहे हैं।

- एम.सी. जैन

निर्वाण लाडू अर्पित कर मनाया गया आदिनाथ मोक्ष कल्याणक

ज्ञानतीर्थ पर हुआ महामस्तकाभिषेक, भक्तामर अर्चना

मुरेना: जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

जैन धर्म के प्रवर्तक श्री १००८ आदिनाथ स्वामी ने आज ही के दिन कैलाश पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया था। तीर्थंकर आदिनाथ ने असि, मसि, कृषि का उपदेश देकर श्रावकों को इस संसार में जीवनयापन के संस्कार प्रदान किए थे, उनके दो पुत्र थे भरत और बाहुबली, उनके बड़े पुत्र भरत के नाम से ही हमारे देश का नाम 'भारत' रखा गया।

ज्ञानतीर्थ जैन मंदिर में क्षुल्लक सहज सागर महाराज, क्षुल्लिका श्री अक्षतमति माताजी, आप्तमति माताजी, क्षयोपशम माताजी के सान्निध्य में तीर्थंकर आदिनाथ मोक्ष कल्याणक के पावन दिवस पर भक्तामर अर्चना, महामस्तकाभिषेक, निर्वाण लाडू सहित अनेकों धार्मिक अनुष्ठान किए गए। प्रातः से ही भक्तों का जमावड़ा लगा हुआ था। अपनी भक्ति भावना से ओतप्रोत, पीले परिधान में श्रावक-श्राविकाओं ने आदिनाथ भगवान की विशेष पूजा अर्चना की। प्रथमकालीन बेला में सभी ने मिलजुल कर आदिनाथ स्वामी का जलाभिषेक, शांतिधारा एवम अष्टद्रव्य से पूजन किया गया। दोपहर को सामूहिक रूप से भगवान आदिनाथ की स्तुति की गई। ४८ दीपों द्वारा श्री भक्तामर पाठ की संगीतमय आराधना की गई। महोत्सव के शुभारंभ में मुकेशकुमार जैन विटुमेन आगरा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। दीप प्रज्वलन गुरुभक्त परिवार द्वारा किया गया, इस अवसर पर शांतिधारा करने का सौभाग्य निर्मल जैन सेठी लखनऊ एवम राजकुमार खरोआ को एवम प्रथम लाडू अर्पित करने का सौभाग्य राजकुमार बरैया जैन मुरेना को प्राप्त हुआ।

ज्ञानतीर्थ के शिखर पर विराजमान मूलनायक भगवान आदिनाथ का स्वर्ण कलशों द्वारा महामस्तकाभिषेक किया गया। प्रथम कलश से जलाभिषेक करने का सौभाग्य जय प्रकाश जैन मथुरा को प्राप्त हुआ।

महोत्सव के सभी धार्मिक अनुष्ठानों की क्रियाएं प्रतिष्ठाचार्य महेंद्र कुमार

शास्त्री मुरैना ने सम्पन्न कराई। अनिता दीदी, मंजुला दीदी, ललिता दीदी के निर्देशन में सभी कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हुए। कार्यक्रम के संयोजक महेश चंद जैन खनेता वाले व राजकुमार जैन बरैया का विशेष सहयोग रहा। भजन गायक एवम संगीतकार मनीष जैन एंड पार्टी ने अपनी स्वर लहरी से जैन भजनों पर सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। महोत्सव के समापन पर संजय जैन बीड़ी वाले मेरठ द्वारा सामूहिक वात्सल्य भोज की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्मचारिणी बहिन अनीता दीदी ने एवम आभार प्रदर्शन योगेश जैन खतौली वालों ने किया।

निर्वाण महोत्सव में योगेश जैन खतौली वाले, निर्मल सेठी लखनऊ, सतीश जैन प्रीति होजरी, जी डी जैन दिल्ली, जय प्रकाश जैन मथुरा, मुकेश जैन विटुमेन आगरा, विजय जैन गहना ज्वेलर्स, नीलेश जैन, वीरेंद्र जैन, सोनू जैन, एडवोकेट दिनेश जैन सहित ग्वालियर, बानमोर, जोरा, मथुरा, दिल्ली, आगरा, धौलपुर, अंबाह के साधर्मी बंधु सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे।

जैन पत्रकार महासंघ ने समाज भूषण राजेंद्र के गोधा स्मृति जैन पत्रकारिता पुरस्कार प्रदाता का सम्मान किया

जैन धर्म स्थल शीतल तीर्थ पत्रकारिता पुरस्कार की घोषणा

जयपुर: जैन पत्रकार महासंघ (रजि) के राष्ट्रीय अधिवेशन जैन धर्म स्थल शीतल तीर्थ रतलाम में 'राजेन्द्र के. गोधा स्मृति जैन पत्रकारिता पुरस्कार प्रदाता' समाचार जगत के संपादक शैलेंद्र गोधा एवं निशांत गोधा जयपुर का सम्मान 'समाचार जगत' कार्यालय में आयोजित महासंघ की मीटिंग ५ फरवरी दोपहर २-०० बजे महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश तिजारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री महेंद्र बैराठी, जयपुर जिला संयोजक चक्रेश जैन ने किया।

महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि मीटिंग में संरक्षक सदस्य शैलेश गोधा ने आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर महानगर में कराए जाने का प्रस्ताव रखा, जिस पर चर्चा की गई, आगामी कार्य समिति की मीटिंग में निर्णय लिए जाने की सहमति हुई।

साधारण सभा रतलाम में महासंघ के सदस्यों को जैन तीर्थ क्षेत्रों पर प्राथमिकता से आवास की सुविधा उपलब्ध कराने व दो वरिष्ठ व श्रेष्ठ पत्रकारों को पुरस्कार के अतिरिक्त तीसरा पुरस्कार जैन धर्म स्थल शीतल तीर्थ पत्रकारिता पुरस्कार दिये जाने की घोषणा क्षेत्र की अधिष्ठात्री डॉ. सविता दीदी रतलाम एवं पंचकल्याणक महामहोत्सव के महामंत्री डॉ. अनुपम जैन इंदौर ने की।

- उदयभान जैन, महामंत्री

गुरु दर्शन के लिए १९ दिन में योग सागर ने विहार किया ५०० किमी.

राजनांदगांव: विश्व के महातपस्वी गुरू आचार्य श्री विद्यासागर महाराज करीब एक साल से राज्य के पहले जैन तीर्थ चन्द्रगिरि में विराजमान है।

बीते एक साल से नामी नेताओं के अलावा देश-विदेश के जैन अनुयायी उनके दर्शन के लिए चन्द्रगिरि पहुंच रहे हैं।

इसी कड़ी में ठिठुरा देने वाली ठंड को दरकिनार कर मात्र १९ दिन में ५०० किमी की दूरी तय निर्यापक मुनिश्री योग सागर महाराज ससंघ विहार कर चन्द्रगिरि पहुंचे। मिली जानकारी के अनुसार निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज, पूज्य सागर, निस्सीम सागर और ऐलक धैर्य सागर महाराज का चातुर्मास महाराष्ट्र के वाशिम में हुआ था। चातुर्मास के समापन बाद करीब १९ दिन पहले मुनिसंघ से वाशिम से सिंगरौली होते हुए चन्द्रगिरि के लिए विहार किया। करीब ५०० किमी की दूरी तय कर मुनिसंघ कल्याणपुर में आहारचर्या के बाद विहार कर चन्द्रगिरि पहुंचे। चन्द्रगिरि पहुंचने पर आचार्य श्री के साथ विराजमान मुनिश्री प्रसाद सागर, चन्द्रप्रभ सागर महाराज सहित प्रतिभास्थली की दीदियों, बालिकाओं और जैन समुदाय के लोगों ने आत्मीय अगवानी की। मुनिश्री योगसागर को करीब ४०८ दिनों के अंतराल बाद अपने गुरू के दर्शन करने का मौका मिला।

और भी मुनिसंघ के आने की संभावना

निर्यापक मुनि योगसागर के अलावा अन्य मुनिसंघ के निकट भविष्य में चन्द्रगिरि पहुंचने की संभावना है। बताया गया है कि झारखंड के इसरी से मुनि श्री प्रमाण सागरजी महाराज, उत्तरप्रदेश के आगरा से मुनिश्री सुधासागर महाराज भी विहार कर छत्तीसगढ़ आचार्य श्री की सेवा में पहुंच रहे हैं।

ॐ अर्हम हे प्रभु! ॐ अर्हम
'जैन एकता' से ही होगा, जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें - हम-सब जैन हैं
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution
Ashok Kothari
(Director)
Mob: 9830030387
Navneet Kothari
(Director)
Mob: 9831232262
GTPL
Goodwill Transport Pvt. Ltd.
Full truck Load For all over India
51 Vivekananda Road, 4th Floor, Kolkata,
West Bangal, Bharat- 700007
Ph: +91332259 1747/1748/1749/1824/1825
Email: info@gtplindia.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

श्री शिव गौ सेवा भजन मंडल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा बेंगलूरू पैलेस मैदान प्रिंसेस श्राइन में रामधाम खेड़ापा के उत्तराधिकारी संत श्री गोविंद राम शास्त्री एवं किष्किंधा पहाड़ी पर स्थित दुर्गा देवी गौशाला के प्रमुख दासोह रत्न संत ब्रह्मानंद स्वामी के सान्निध्य में 'एक शाम गौ माता के नाम' विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। राजस्थान से आए हुए प्रसिद्ध भजन कलाकार रमेश माली, लेहरु दास वैष्णव, सोनू सिसोदिया ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी, जिससे 'गौभक्त' भाव विभोर होकर देर रात तक आनंद उठाते रहे। कार्यक्रम में युवा समाज सेवी गौ प्रेमी महेन्द्र मुणोत मुख्य अतिथि के रूप में एवं राजस्थान पत्रिका बेंगलूरू के संपादकीय प्रभारी कुमार जीवेन्द्र झा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। संतों ने अपने प्रवचन में कहा, 'सनातन धर्म ही शाश्वत सत्य है।' श्री मुणोत ने गाय की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए अपने वक्तव्य में कहा, ''गौ सेवा हमारा कर्तव्य है। अन्नदाता किसान राष्ट्र का स्वाभिमान है।'' ट्रस्ट के हनुमान माली, मोतीलाल माली एवं अन्य सदस्यों ने अतिथियों एवं दानदाताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन राजू माली ने किया।

बन्नरगट्टा स्थित श्री श्याम गौशाला खाटूश्याम जी मंदिर परिसर में नव वर्ष के स्वागत में सत्संग-भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन कलाकार हेमंत जोशी ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी, जिस पर गौ भक्त झूम उठे। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी गौप्रेमी महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में गौ भक्तों को संबोधित करते हुए कहा, 'सेवा की भावना एवं सकारात्मक सोच के साथ जीवन के हर पल का आनंद लें। माता-पिता की आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा एवं सम्मान करें तथा कोई भी कार्य ऐसा ना करें जिससे उनका दिल दुखे.'' सोनाणा खेतलाजी भक्त दिलीप सोनी, हरिकिशन गहलोत, प्रताप सिंह, पुखराज माली एवं अन्य गौ भक्तों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

चंद्रा लेआउट स्थित बीएमटीसी बस डिपो परिसर में शनिवार को प्रात: पोकेट कैलेंडर का विमोचन किया। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'देश की सेवा के लिए राजनेता या अधिकारी बनना जरूरी नहीं है, कोई भी सामान्य नागरिक निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करे तो वह भी देश की सेवा है।' डिपो के प्रबंधक हरीश कुमार, चंद्रशेखर एवं कुमार ने श्री मुणोत को सम्मानित किया। बस रुट एवं यातायात नियमों की जानकारी सहित यह कैलेंडर बीएमटीसी कर्मचारियों के लिए उपयोगी है।

श्री राजराजेश्वरी गलियारा बलगा द्वारा मारुति नगर में मकर संक्रांति पर्व के उपलक्ष में संक्रांति सभा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी गौ प्रेमी महेन्द्र मुणोत ने गौ पूजन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विशाल जन समूह की उपस्थिति में गायों की पारंपरिक तरीके से शोभा यात्रा निकाली गई एवं प्रसाद वितरण किया गया। राजाणा एवं गंगाधर ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

चोलुर पाल्या क्रिकेटर्स द्वारा चोलुर पाल्या खेल मैदान में शॉर्ट पिच क्रिकेट क्रीडा स्पर्धा अप्पू कप का आयोजन किया गया। दो दिन चली इस प्रतियोगिता में ४० टीमों ने हिस्सा लिया। विशिष्ट अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने क्रीड़ा स्थल पर पहुंचकर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया। यह जानकारी श्री भूपेन्द्र एस. भानावत ने एक विज्ञप्ति में दी है।

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

संघपति प्रदीप जैन 'मामा'
गौरवाध्यक्ष जिनशरणं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
ग्वालियर निवासी-भोपाल प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८७७०३४३४८१

प्रदीप जी 'जिनशरणं' तीर्थधाम की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'जिनशरणं' तीर्थधाम के निर्माण की प्रेरणा आचार्य श्री पुलक सागर जी की है, जिनकी प्रेरणा से समस्त पुलक जैन परिवार द्वारा कड़ी मेहनत कर तीर्थ धाम का निर्माण किया गया, इसमें सभी ने अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है, इस तीर्थधाम में मुनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित की गई है, इस स्थान पर कल्पतरु वृक्ष भी है, गजराज मंदिर, नवग्रह मंदिर, ध्यान मंदिर, वात्सल्य भवन, गुरु भगवंतो के ठहरने की व्यवस्था, भोजनशाला व हॉस्टल भी बनाया गया है। और भी कई सुविधाएं हैं 'जिनशरणं' में...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज के लिए सबसे बड़ी जरूरत बन गई है, जैन धर्म श्रेष्ठ धर्म के रूप में जाना जाता है, इसके बावजूद हमारे समाज में एकता ना होने के कारण आज हमारे समाज और धर्म को वह महत्व नहीं मिल पा रहा जो कि मिलना चाहिए, जबकि देश की आर्थिक स्थिति में सबसे बड़ा योगदान जैन समाज का ही है क्योंकि जैन समाज में अधिकतर व्यापारी वर्ग है, जिनका देश की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है, यदि सभी पंथ एक हो जाएं तो जैन धर्म और समाज को एक अलग ही आयाम प्राप्त होगा, इसीलिए समाज में एकता होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ने लगी है, बस उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। युवा पीढ़ी भी जैन धर्म के महत्व संस्कारों को समझने का प्रयास कर रही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम तो सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए इंडिया तो ब्रिटिशर्स की देन है, हमारे देश की वास्तविक पहचान 'भारत' थी और भारत नाम से ही रहनी चाहिए।

प्रदीप जी मूलत: मध्य प्रदेश स्थित ग्वालियर के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षक 'ग्वालियर' में ही संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप 'भोपाल' में बसे हैं और आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाते हैं, समाज सेवा में आपका विशेष रुझान है, 'जिनशरणं' तीर्थधाम के संघपति की भूमिका निभा रहे हैं। जैन ग्लोबल से भी जुड़े हुए हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

महावीर प्रसाद जैन
उपाध्यक्ष-आचार्य बाहुबली आध्यात्मिक अनुसंधान ट्रस्ट हरियाणा
दिल्ली निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१००२६५५०

महावीर जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' स्थापित करने के लिए जरूरी है, चारों संप्रदाय एक साथ-एक मंच पर आएं, दूसरा अपने नाम के आगे गोत्र लिखने के बजाय 'जैन' अवश्य लिखें, जिससे हमारी वास्तविक संख्या का पता चल सके, समाज में एकता स्थापित होगी तभी हमारे धर्म समाज का वर्चस्व बढ़ेगा और यह कार्य सभी को मिलकर करना होगा, इसीलिए 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है, सभी का अपने धर्म और समाज के लिए लगाव कम होते जा रहा है, दूसरा प्रमुख कारण अंतरजातिय विवाह, जिसके कारण परिवार में धर्म और संस्कारों की कमी आ रही है, इसीलिए युवाओं को चाहिए कि अपने धर्म और समाज के भीतर ही विवाह करें, जिससे हमारे जैन धर्म के संस्कार बनें रहें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा इंडिया तो कभी था ही नहीं, इसलिए अपने देश का नाम सिर्फ भारत ही रहना चाहिए।

महावीर जी मूलतः हरियाणा के निवासी हैं आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'दिल्ली' में संपन्न हुई है, यहां आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं साथ ही वर्तमान में आचार्य बाहुबली आध्यात्मिक अनुसंधान ट्रस्ट हरियाणा के उपाध्यक्ष हैं, पूर्व में भोगल दिगम्बर जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

निर्मल गोधा जैन

अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन जिनशरणं तीर्थधाम ट्रस्ट
अजमेर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२१०२३५५७

निर्मल जी नवनिर्मित 'जिनशरणं' तीर्थधाम की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री पुलक सागर जी जब मुंबई से सूरत प्रवास कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि इस रास्ते पर एक भी दिगम्बर साधुओं के लिये साधु निवास, धर्मशाला या मंदिर नहीं है । 'जिनशरणं' तीर्थधाम की प्रेरणा आचार्य श्री पुलक सागर जी द्वारा मिले ये तीर्थ धाम ७ एकड़ में फैला हुआ है, इसमें त्रिमूर्ति स्थापित है मूल नायक पार्श्वनाथ भगवान की, इसमें नौ कमरे मुनि महाराज के ठहरने के लिए बने हुए हैं, ४५ कमरे यात्रियों के ठहरने के लिए बने हुए हैं, हॉल व भोजनशाला है, जिसमें २५० लोगों के बैठने की व्यवस्था है, ५० विद्यार्थियों के ठहरने के लिए हॉस्टल भी बना हुआ है। यह एक ऐसा तीर्थधाम बना है, जिसमें जैन धर्म के प्रति लोगों की आस्था बढ़े, जैन धर्म का प्रचार प्रसार हो और श्रद्धालुओं को उचित व्यवस्था प्राप्त हो।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जीतो' जैसी कई संस्थाएं इस दिशा में कार्य कर रही हैं कि दिगम्बर और श्वेताम्बर एक मंच पर स्थापित हों, मूल रूप से तो सभी एक ही हैं पर सबके मत और आमनाय अलग-अलग होने के बाद भी हम एक हैं, भिन्नता तो हमारे गुरु भगवंतों में दिखाई देती है, क्योंकि उनके आहार-विहार के तरीके अलग-अलग हैं, यदि हमारे गुरु भगवंत एक साथ-एक मंच पर स्थापित होकर 'एकता' के लिए प्रयास करें तो अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती दिखाई दे रही है, वह आधुनिक जीवन शैली में इतने रम गए हैं कि उनके पास मंदिर जाने का समय नहीं है और ना ही वे जैन धर्म के नियमों का पालन करते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि इंडिया तो अंग्रेजी नाम है, हमारी पहचान प्राचीन काल से 'भारत' नाम से ही थी और 'भारत' ही रहनी चाहिए, यह राजनीतिक मुद्दा है और इसे राजनीतिज्ञों द्वारा ही सुलझाया जा सकता है।

निर्मल जी मूलत: राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित 'झीरोता' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा राजस्थान में ही हुई है, पिछले कई वर्षों से आप मुंबई में बसे हैं और रियल एस्टेट के कारोबार जुड़े हैं। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री दिगम्बर जैन जिनशरणं तीर्थधाम ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। अखिल भारतीय पुलक चेतना मंच से जुड़े हैं, इसमें मुंबई की अध्यक्षा आपकी पत्नी कल्पना जी हैं।

हनुमान मल बोथरा

व्यवसायी व समाजसेवी
देशनोक निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३७५५०२००५

हनुमान जी आचार्य श्री रामलाल जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अखिल भारतीय साधु मार्गी जैन संघ के वर्तमान आचार्य रामलाल जी म.सा. एक अद्भुत मानवता के दूत कहे जाते हैं, आपके प्रवचन हमेशा ही समाज हेतु, आत्म चिंतन और आत्म कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। आचार्य श्री के दर्शन मात्र से आत्मा प्रफुल्लित हो जाती है, ऐसे गुरुवर का सानिध्य हमेशा मिलता रहे यही प्रार्थना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' तभी संभव हो सकती है, जब समाज में विघटन ना हो, पर आज हमारा समाज दिन प्रतिदिन विघटन की ओर बढ़ रहा है, समाज में हम इतने पंथ और संप्रदाय बना रहे हैं, इसका कारण नाम की महत्वाकांक्षा, चाहे वह श्रावक श्राविकाओं में हो या गुरु भगवंतों में, यदि सभी अपने नाम के महत्व की आशा को त्याग, समाज कल्याण की बात करें तो हम 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकते हैं, दूसरा प्रमुख कारण कट्टरवादिता हम अपने आप को श्रेष्ठ और दूसरों को हेय, तो कभी हम आगे नहीं बढ़ सकते, इसीलिए हमारे नजर में सभी समान होने चाहिए, 'जैन एकता' के लिए सभी को अपने अहं भाव के त्याग का प्रयास करना होगा, तभी एकता संभव हो सकती है। पंथ और सम्प्रदाय सिर्फ संगठन है समाज को चलाने के लिए हमें पंथवाद से उपर उठकर 'मैं महावीर का और महावीर मेरे' का ध्यान करना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, इसका प्रमुख कारण संस्कार है, उन्हें वे संस्कार नहीं मिल पा रहे, जो मिलने चाहिए, यदि बच्चों को बचपन से ही अपने धर्म और समाज से जुड़े रहने के संस्कार दिए जाएं तो युवावस्था में भी अपने धर्म और संस्कार से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है और 'भारत' ही रहना चाहिए। भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, हमें गर्व है कि हम भारतवासी हैं अतः हमारे देश का नाम हर भाषा में 'भारत' ही रहना चाहिए।

हनुमान जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले स्थित 'देशनोक' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'देशनोक' में ही संपन्न हुयी है। पिछले ३८ सालों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही साधु मार्गी जैन संघ सूरत में नींव रखनेवालों में आपकी भी भूमिका अहम रही है। आपके प्रेरणा स्तोत्र आचार्य श्री नानेश एवं पथ प्रदर्शक मरुधरा सिंहनी श्री नानुकंवर जी म.सा. रहे हैं। यथासंभव अन्य कई संस्था से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

रतनलाल पारख
पूर्व अध्यक्ष साधुमार्गी जैन संघ, दल्ली राजहरा
बालीसर निवासी-छत्तीसगढ़ प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२४१३२५०३

रतनलाल जी आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री हमारे लिए भगवान स्वरूप हैं, उनके नाम लेने मात्र से हमारे सारे काम पूर्ण हो जाते हैं, उनके दर्शन से मन बहुत प्रसन्नचित हो जाता है और हमारा पूरा परिवार उनके दर्शन करने वर्ष में दो-तीन बार अवश्य जाता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है और यह तभी संभव हो सकता है जब सम्पूर्ण पंथ्य मिलकर प्रयास करें, एकता ना होने से आज हमारा धर्म और समाज दोनों ही खतरे में आ गया है, इसीलिए सभी पंथ और संप्रदाय को मिलकर इस दिशा में प्रयास करना होगा, तभी एकता स्थापित हो सकती है। सभी समाज को पर्युषण पर्व मिलकर मनाना चाहिए, हमारे गुरुदेव आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. भी इसके पक्षधर है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ रही है, विशेषकर छोटे-छोटे गांव के युवा वर्ग अपने धर्म और समाज के प्रति विशेष रुझान रखते हैं, वह होने वाले विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, शहरों में यह कम दिखाई देता है, गुरु भगवंतो के सानिध्य में जाने से युवा वर्ग अवश्य ही धर्म के प्रति आकर्षित होगा, साधुमार्गी जैन संघ द्वारा समता युवा संघ का भी निर्माण किया गया है, जिससे उन्हें अधिक से अधिक जोड़ा जा सके।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ। 'भारत' हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है।

रतनलाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बालीसर' के निवासी हैं पर आपके पूर्वज कई वर्षों से 'छत्तीसगढ़' में आकर बस गए हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप फर्नीचर व राइस मिल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ एवं वर्धमान स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

अशोक सुराणा
ट्रस्टी साधुमार्गी जैन संघ सूरत
बीकानेर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२७३३१८०९

अशोक जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का संपूर्ण जीवन त्यागमय और तपस्या से परिपूर्ण है, उनके आचार विचार, कथनी-करनी में एकरूपता दिखाई देती है, उनके दर्शन मात्र से और कृपा दृष्टि पड़ने से ही बहुत बड़ी सुख की अनुभूति होती है। हमारा रोम रोम उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता है, ऐसे गुरुवर का लाभ हमेशा मिलता रहे, यही कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' स्थापित करने के लिए सबसे बड़ा मुद्दा संवत्सरी व पर्युषण है, यदि यह सभी संप्रदायों द्वारा एक साथ यह पर्व मनाया जाए तो 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है इसके लिए हमारे आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने भी अच्छी पहल की है, आप एक साथ संवत्सरी पर्व मनाने के पक्ष में हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ भी रही है और विमुख भी हो रही है, जो युवा पीढ़ी हमारे आचार्य श्री के सानिध्य में आते हैं उनसे काफी प्रभावित होते हैं और जुड़ते हैं आचार्य श्री द्वारा व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का बहुत बड़ा आयाम प्रारंभ किया गया है और आज हमारे समाज को इसकी सबसे अधिक जरूरत भी है, जिसके माध्यम से युवाओं और समाज को दिशा प्रदान कर सकते हैं और फिजूल खर्चों पर रोक लगायी जा सकती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि प्राचीन काल से हमारे देश की पहचान 'भारत' नाम से ही रहा है और 'भारत' ही रहना भी चाहिए।

अशोक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'बीकानेर' में ही संपन्न हुई है। १९८४ से आप सूरत में बसे हैं और डायमंड के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ सूरत के ट्रस्टी हैं। वर्तमान में समता भवन के ट्रस्टी, लायंस क्लब के कोषाध्यक्ष, महावीर इंटरनेशनल के सदस्य व सुसवाणी माता भक्त मंडल के अध्यक्ष हैं अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

'जिनागम' समस्त जैनों की एकमात्र पत्रिका है इसे पढें व अन्यों को भी पढायें...

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

अनिल जैन (सिटी किंग)

अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन समाज
बाहुबली एनक्लेव, दिल्ली
भ्रमणध्वनि: ९८१११३७४९८

अनिल जैन जी दिल्ली के निवासी हैं। दिल्ली से ही शिक्षा प्राप्त की, दिल्ली में कपड़ों के व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही बाहुबली एनक्लेव में स्थित श्री दिगम्बर जैन समाज में अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। पिछले ४० वर्षों से रेडीमेड कपड़ो के व्यवसाय में कार्यरत है। अशोक मार्केट (गांधीनगर) के मंत्री व बाहुबली वेलफेयर असोशिएशन के अध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों में कार्यकारिणी सदस्य हैं।

आपके दृष्टिकोण से आज की युवा पीढ़ी धर्म व संस्कृति से जुड़ी हुई है। 'जैन एकता' पर बल देते हुए कहते हैं कि जैन समाज को एकता देकर अच्छे विचारों व कार्यक्रमों द्वारा जैन समाज को जोड़ा जा सकता है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि देश के प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में राम मंदिर जैसा भव्य व सांस्कृतिक स्थल की स्थापना हुई, राम मंदिर का मैं संपूर्ण समर्थन करता हूं। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं अभियान से मैं सहमत हूं, मैं पहले भी देश के नाम को भारत कह कर ही संबोधित करता था, आगे देश की जनता से भी अनुरोध करता हूं कि 'भारत' ही बोलें अपने देश को। जय भारत!

कुमारपाल मेहता

अध्यक्ष विमल नाथ जैन संघ पेढ़ी
आहोर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९५८७१९९९९

कुमारपाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में कहते हैं कि 'जैन एकता' हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है। आज हमारा जैन समाज कई पंथ और संप्रदायों में बंटा हुआ है, जिससे हमारे धर्म और समाज का महत्व खतरे में आ गया है। अपने धर्म और समाज की रक्षा हेतु समाज में 'जैन एकता' स्थापित करना बहुत जरूरी है और यह कार्य हमारे समाज के गुरु भगवंतो द्वारा ही संभव किया जा सकता है, यदि वे प्रयास करें तो अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है और यह होना बहुत जरूरी भी है।

आज की युवा पीढ़ी समाज व धर्म जुड़ी हुई है पर हम उन्हें पुर्णत: जोड़ नहीं पा रहे हैं, यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वह हमसे ज्यादा धर्म और समाज से जुड़ेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही सराहनीय अभियान है, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

कुमारपाल जी राजस्थान के जालौर जिले में स्थित 'आहोर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यही संपन्न हुयी है, पिछले ४० वर्षों से आप दिल्ली में बसे हैं और मोबाइल के कारोबार से जुड़े हैं। भारत सरकार के विकलांगता मंत्रालय (दिव्यांगजन) में सलाहकार बोर्ड सदस्य की भूमिका निभा रहे है। साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। विमलनाथ जैन संघ और नंदीश्वर द्वीप जालौर के अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

डालचंद नाहटा

व्यवसायी व समाजसेवी
देशनोक निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७२७०२४३७८

डालचंद जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्यश्री के दर्शन मात्र से मन को असीम शांति प्राप्त होती है, उनके प्रवचन हमेशा ही हमें प्रेरित करते रहे हैं, उनके प्रवचनों का आधार समाज, धर्म, परिवार, हर तरह का रहता है, जिससे हमें हमेशा प्रेरणा मिलती रहती है और धर्म के प्रति हमारी लालसा और बढ़ जाती है। गुरुदेव जी के चरणों में कोटिश: बार नमन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' हमारे समाज में बहुत जरूरी है, हमारी संख्या वैसे भी बहुत कम है, उस पर भी हम यदि इसी तरह पंथ और संप्रदाय में बंटे रहें तो हमारे धर्म और समाज का महत्त्व समाप्त हो जाएगा, अपने धर्म समाज के महत्व को बनाए रखने के लिए समस्त समाज को एक साथ-एक मंच पर आकर 'जैन एकता' के लिए कार्य करना ही होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से कम जुड़ी है और इसका कारण उनकी आधुनिक जीवन शैली है, जिसमें उनके पास धर्म के लिए कोई स्थान नहीं है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

डालचंद जी मूलत: राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'देशनोक' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। कुछ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं और व्यापार से जुड़े रहे। वर्तमान में सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, आप साधुमार्गी जैन संघ से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

अशोक बोहरा

मुख्य संयोजक जिनशरणं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
बांसवाड़ा निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४१०११७०

अशोक जी तीर्थधाम 'जिनशरणं' के बारे में बताते हैं कि यह अपने आप में एक अद्भुत और ऐतिहासिक स्थापत्य है, जिसमें मंदिर के साथ-साथ अन्य मुख्य वस्तुओं का निर्माण भी किया गया है, जैसे आहार-विहार करने वाले गुरु भगवंतों और साधु साध्वियों व श्रावकों के लिए विश्राम की व्यवस्था जैसी कई सुविधाएं प्रदान की गई है, इस स्थापत्य के प्रेरणा स्रोत आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी व आचार्य श्री पुलक सागर जी हैं, यह क्षेत्र पूरी तरह से नैसर्गिक छटाओं से भरा हुआ है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही हमारे समाज में 'जैन एकता' की बहुत जरूरत है और इसके लिए सभी संप्रदायों को एक साथ एक मंच पर आना चाहिए और एक होकर इसके लिए कार्य करना चाहिए, यदि णमोकार मंत्र बोलने वाले एक साथ-एक मंच पर आएंगे तो समाज में जो बिखराव बढ़ रहा है वह समाप्त हो जाएगा। समाज में इसी बिखराव के कारण युवा पीढ़ी में अंतरजातिय विवाह अधिक बढ़ने लगा है, इसे रोकने के लिए हमारे समाज को एक साथ-एक मंच पर आकर कार्य करना होगा ताकि 'जैन एकता' जैसा अभियान सफल हो।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख हो रही है, इसका कारण भी समाज में फैला संप्रदायवाद ही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'संदर्भ में आपका कहना है कि हर भाषा में अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, प्राचीन काल से हमारे देश की पहचान 'भारत' ही रहा है और भारत ही रहना चाहिए।

अशोक जी मूलत: राजस्थान स्थित 'लोहारिया बांसवाड़ा' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'लोहारिया बांसवाड़ा' में ही संपन्न हुयी है। पिछले कई वर्षों से आप गुजरात के 'अहमदाबाद' में बसे हुए हैं, और कंस्ट्रक्शन के कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अनेकांत गोम्मटगिरी अतिशय तीर्थ क्षेत्र बांसवाड़ा राजस्थान के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

आलोक जैन

व्यवसायी एवं समाजसेवी
दिल्ली निवासी
भ्रमणध्वनि: ९३१००४८६२०

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जैन समाज में एकता का अभाव है जिसके कारण हमारा समाज अपने मूल सिद्धांतों से भटक गया है। समाज वर्गों में बट गया है कोई दिगम्बर कोई श्वेताम्बर। जैन समाज बाहरी मन से एक है आंतरिक मन से एक नहीं है, जिस कारण एक होते हुए भी एक नहीं है।

आपके दृष्टिकोण से आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म व समाज से विमुख होती दिखाई दे रही है, हमारे समाज को प्रयास करना चाहिए अपनी वाणी व कार्यों में ऐसा बदलाव लाए जिससे युवा वर्ग की रुचि बढे, तथा युवा धर्म व समाज से अधिक जुड़ सके।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, इस अभियान की सफलता के लिए आप कहते हैं कि हमारा हिंदू देश है, हम हिंदू हैं, हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी है। भारत नाम हमारी संस्कृति से जुड़ा नाम व पहचान है, इंडिया नाम हमारी पहचान नहीं हो सकता, अतः अवश्य ही देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

आलोक जी मूलतः दिल्ली निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पिछले कई वर्षों से आप श्री दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर २४ रोहिणी में महासचिव के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

शंखेश्वर पार्श्वनाथ का कलेंडर का विमोचन

चैन्नई: श्री आदिनाथ ट्रस्ट, सूले चेन्नई में आज लगभग ११०० महामंगलकारी पौष दसम के अठ्ठम के पारणे शांता पूर्वक हुए। गच्छाधिपति प.पू.आचार्य श्री उदयप्रभ सूरीश्वरजी मा. सा आदि ठाणा ने सभी अठ्ठम के तपस्वियों को महामांगलीक सुनाया और आशीर्वाद दिया। आचार्य भगवंत ने श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का सन् २०२४ का कलेंडर का विमोचन किया गया।

श्रेष्ठीवर्य हुलासमल प्रमोद कुमारी चोरडीया परिवार, चेन्नई/ नागोर वालों ने पारणे कराने का एवम् कलेडंर वितरण करने का लाभ लिया है।

विशेष उपस्थिति प्रमोद चोरडीया, श्रीमती मनीषा चोरडीया, किशोर ओटमल छाजेड, रमेश मुठलिया, सुशील फुलफगर, प्रकाश बन्दा, मांगीलाल कांकरिया, चोरडीया परिवार की खूब़ खूब़ अनुमोदना और अभिनन्दन किया गया।

- 'जैनम जयती शासनम्'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

- Investment Banking
- NBFC
- Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

10+ NATIONALISE BANK

20+ PRIVATE BANKS

30+ FOREIGN BANKS

50+ NBFC

100+ CO-OPERATIVE BANKS

Which Institute Should I Prefer ?

Who Will be fasted in Providing Loan ?

Who Will Give Lower Rate of Interest ?

Who Will give Higher Loan Eligibility ?

Confused ? Can't Decide ?

Why go to various Institution for your fund requirement ?

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Shall cater to your funds by selecting the Financial Institution best suited for you which has :

- Speedy Approval.
- Lowest Processing Fees.
- Fast Disbursement.
- Quick Processing.
- Lowest Rate Of Interest.
- Higher Eligibility.

Do You Know ?

- Working Capital loan is available at approx 11% to 12% p.o.
- Loan is available against plot of NA Land.
- Loan to Builders & developers (Rera Compliant) Within 20-25 working days.
- Unsecured loan between 12-14 % p.o.
- Businessman can avail loan upto Rs. Five crores without collateral under government sponsored scheme
- Eligibility of Housing loan can be increased by considering projected income.
- Loan is available upto 90% of the property value.
- Small business can avail working capital loan upto Rs. 10 Lacs without collateral under government sponsored scheme.
- Loan is available for educational Institute against discounting of future fees.

Contact Now :

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Reduce your interest cost without reducing your loan.

Enhance your eligibility.

Loan at your Door Steps.

enquiry@just4uloan.com | www.just4uloan.com

Call Now : 022 - 28615154

Address : 504, Rainbow Chambers, Near MTNL Exchange, S.V. Road, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
Published on 09th February 2024 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

ONLY ₹50/- PER PC

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598